04- सभी वर्गों के जीवन का लेखा-जोखा करतीं लघुकथाएं

05- शुद्ध विचारों से उपजी कला ही शुद्ध होती है

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 1 सितंबर, 2024

06- देवास के पत्रकार गण सदैव मेरे दिल में रहेंगे : आनंद मोहन

07- यादों में बसे 'दूरदर्शन' के वे सीरियल

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22 अंक 4 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

प्रकाश

फोटो- गिरीश शर्मा

सुप्रभात

सब कुछ हो चुका है
और अभी होना है
उसे कहा जा चुका है
और अभी कहना है
वह ठीक उसी तरह नहीं होगा
और ठीक उसी तरह कहा भी नहीं जाएगा
एक खेल होगा हमेशा होने और कहने में
जिसमें होना छुपने की कोशिश करेगा
कहना उसे ढूँढने की
इसी लुकने-ढूँढने में बहुत मुमकिन है
कहना होने को थोड़ा बहुत पा जाए
और ताज्जुब नहीं कि साथ-साथ
कुछ अनहुआ-अनहोना भी
अपनी मुट्ठी में ले आए
या होना खुद कहने में ही जा छुपे
और कहना उसे शब्द शब्द ढूँढता फिरे
इस तरह खुद को पा जाए
बूझते रहें खेल देखने वाले
बहसा करें आपस में
होने को कहना है
कि कहने में होना है
होने को खोना है
कि कहने में पाना है।

- आशुतोष दुबे

महिलाओं के खिलाफ अपराधों पर होने वाले फैसलों में आए तेजी

सीजेआई की मौजूदगी में पीएम मोदी की सुप्रीम कोर्ट के जजों से अपील

पीएम मोदी बोले-महिलाओं के खिलाफ अपराध गंभीर चिंता का विषय है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की मौजूदगी में अन्य जजों से महिला अपराध से जुड़े मामलों को लेकर बड़ी बात कही है। पीएम ने कहा है कि महिलाओं की सुरक्षा और उनके खिलाफ होने वाले अपराध के मामलों के फैसलों में तेजी लाने की जरूरत है। बीते दिनों कलकत्ता में लेडी डॉक्टर के साथ हुए रेप और हत्याकांड के बाद पीएम ने पहली बार उससे जुड़े मुद्दे पर बोला है। हालांकि कलकत्ता मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया था। पीएम मोदी ने कहा कि आज के समय में महिलाओं के खिलाफ अत्याचार, बच्चों की सुरक्षा समाज के लिए गंभीर समस्या है। भारत में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर कई कठोर कानून बने हैं। अब इन कानूनों को सक्रिय करने की जरूरत है। देश की आधी आबादी को सुरक्षित रखने के लिए महिला अत्याचार से जुड़े मामलों के फैसलों में तेजी लाने की जरूरत है। सुप्रीम कोर्ट की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में पीएम मोदी बोल रहे थे। इस दौरान पीएम ने डाक टिकट और सिक्कों का अनावरण भी किया। इस कार्यक्रम में सुप्रीम कोर्ट के सभी वरिष्ठ जज मौजूद थे। उन सभी के सामने ही पीएम ने महिला सुरक्षा के मामले को लेकर महत्वपूर्ण बातें कही। पीएम ने कहा कि पिछले एक दशक में न्याय में देरी को खत्म करने के लिए कई स्तर पर प्रयास हुए हैं। न्यायिक बुनियादी ढांचे के विकास को लेकर पिछले 10 सालों में करीब 8 हजार करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। पीएम ने सुप्रीम कोर्ट को लेकर कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के 75 वर्ष केवल एक संस्था मात्र की यात्रा नहीं है बल्कि ये यात्रा भारतीय संविधान और उसके संवैधानिक मूल्यों की है।

विमुक्त, घुमन्तु और अर्द्ध-घुमन्तु जातियों के लोगों को मिलेगा विकास का पूरा लाभ : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

शिक्षा और कॅरियर निर्माण के लिए समाज के युवाओं को देंगे सभी सुविधाएं

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में रहने वाले विमुक्त, घुमन्तु और अर्द्ध-घुमन्तु समुदाय के लोगों को कल्याणकारी योजनाओं का पूरा लाभ दिया जाएगा। प्राचीन काल से घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु जातियों ने साहस और शौर्य के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि घुमन्तु और अर्द्ध-घुमन्तु जातियों के युवाओं और अन्य प्रतिभाओं को शिक्षा के साथ अच्छे भविष्य और कॅरियर निर्माण के लिए राज्य सरकार पूर्ण सहयोग करेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को रवीन्द्र भवन, भोपाल में विमुक्ति दिवस के राज्यस्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु कल्याण विभाग की प्रदर्शनी भी देखी और विभाग के पोर्टल 'समर्थ' का लोकार्पण किया।

मुख्यमंत्री ने घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु समाज के कल्याण के लिए कीं अनेक घोषणाएँ- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इन जातियों को एक स्थान का निवासी घोषित करने के उद्देश्य से एक स्थान मान्य करते हुए मूल मुकाम को दर्ज किया जाएगा। इसके अनुसार आवश्यक अभिलेख तैयार करने में मदद मिलेगी। इससे घुमन्तु और अर्द्ध-घुमन्तु समुदाय की वे जातियां जो वर्तमान में कल्याण योजनाओं के लाभों से छूटी हुई हैं, उन्हें भी योजनाओं का लाभ दिया जा सकेगा। भाट, चारण, बेलदार, पारधी, कुचबंदिया आदि जातियों को भी योजनाओं का लाभ प्रदान किया जाएगा। कबूतरी, कालबेलिया, सिकलीगर, बांछड़ा आदि जातियों के लिए विशेष योजना बनेगी। गड़रिया, लोहार जाति एवं अन्य जातियों के लिए आवश्यकतानुसार आवास व्यवस्था की जाएगी। प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ देते हुए इन जातियों के नागरिकों को बिजली, पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं दी जाएंगी। युवाओं को आवश्यक प्रशिक्षण का भी लाभ दिया जाएगा। अग्निवीर और अन्य योजनाओं से लाभान्वित करने पर ध्यान दिया जाएगा। इन जातियों के युवाओं के लिए खेल क्षेत्र में भी आवश्यक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संभाग स्तर पर इन जातियों की लोक-संस्कृति को प्रोत्साहन देने के लिए प्रयास किए जाएंगे एवं शहरों में बनने वाले गीता भवनों से भी समाज की जातियों को जोड़ा जाएगा।

चंपाई के बाद लोबिन हेम्ब्रम ने भी थामा भाजपा का दामन

● बोले- तीर-धनुष में अब शिबू सोरेन के समय जैसा दम नहीं

रांची (एजेंसी)। झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के पूर्व विधायक लोबिन हेम्ब्रम भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए हैं। लोबिन हेम्ब्रम ने शनिवार को रांची स्थित पार्टी कार्यालय में एक समारोह में भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

इस दौरान, असम के मुख्यमंत्री और झारखंड भाजपा के सह-प्रभारी हिमंत बिस्वा सरमा, झारखंड भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन और मधु कोड़ा, नेता प्रतिपक्ष अमर बाउरी और पूर्व विधायक सीता सोरेन भी मौजूद रहीं। इससे एक दिन पहले, शुक्रवार को ही, पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन और उनके बेटे बाबूलाल सोरेन भी भाजपा में शामिल हुए थे।

महाराष्ट्र चुनाव में हावी हुआ छत्रपति शिवाजी फैक्टर !

मूर्ति ढहने से एनडीए में दरार,माफी और दोषारोपण का सिलसिला जारी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव से पहले सत्ताधारी महायुति गठबंधन सहयोगियों के बीच तनाव बढ़ता नजर आ रहा है। पहले तो लोकसभा चुनाव में खराब प्रदर्शन के चलते महायुति में दरार सामने आई और फिर अब छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के ढहने से आग भड़क उठी। इस मुद्दे को लेकर शिवसेना, एनसीपी और भाजपा के नेता अलग-अलग स्वर में बात करते दिख रहे हैं। यह जरूर है कि छत्रपति की प्रतिमा गिरने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को माफी मांगी। उन्होंने कहा, छत्रपति शिवाजी महाराज... मेरे लिए सिर्फ नाम नहीं हैं, हमारे लिए छत्रपति शिवाजी महाराज आराध्य देव हैं। पिछले दिनों सिंधुदुर्ग में जो हुआ, आज मैं सिर झुकाकर मेरे आराध्य देव छत्रपति शिवाजी महाराज जी के चरणों में मस्तक रखकर माफी मांगता हूं। सिंधुदुर्ग जिले की मालवण तहसील में राजकोट किले में स्थापित मराठा योद्धा की 35 फुट ऊंची प्रतिमा 26 अगस्त को ढह गई थी। इसके गिरने के बाद पीएम मोदी की यह पहली टिप्पणी रही। मूर्ति गिरने की घटना पर राज्य भर के लोगों ने आक्रोश व्यक्त किया है। विपक्ष ने सरकार पर निशाना साधते हुए उस पर शिवाजी महाराज का अपमान करने का आरोप लगाया। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) नेता अंबादास दानवे ने इस पर सरकार पर निशाना साधा।

पतंजलि के मंजन में नॉनवेज मटेरियल होने का दावा

दिल्ली हाईकोर्ट में याचिका लगाई, कोर्ट ने बाबा रामदेव से मांग लिया जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट में पतंजलि के प्रोडेक्ट दिव्य दंत मंजन को लेकर एक याचिका दायर की गई है। इसमें प्रोडेक्ट में नॉनवेज मटेरियल होने का दावा किया गया है। याचिककर्ता एडवोकेट यतिन शर्मा ने आरोप लगाया गया है कि कंपनी अपने दिव्य दंत मंजन में समुद्र फेन (कटलफिश) नाम का मांसाहारी पदार्थ यूज करती है। एडवोकेट यतीन शर्मा में यह भी बताया गया है कि नॉन वेजिटेरियन पदार्थ के इस्तेमाल के बावजूद उस प्रोडक्ट पर ग्रीन यानी वेजिटेरियन लेबल दिया गया है। इस पर कोर्ट ने पतंजलि आयुर्वेद और बाबा रामदेव को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 1 सितंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी ने 3 वंदे भारत ट्रेनों को दिखाई हरी झंडी

- ये उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में कनेक्टिविटी बढ़ाएंगी, देश में अब 102 वंदे भारत ट्रेनें हुईं

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को 3 नई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई। प्रधानमंत्री वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से इवेंट में शामिल हुए। ये तीनों ट्रेनें चेन्नई से नागरकोइल, मदुरै से बेंगलुरु और मेरठ से लखनऊ के बीच चलेंगी। पीएम मोदी ने इस मौके पर कहा- वंदे भारत आधुनिक होती भारतीय रेलवे का नया चेहरा है। आज हर रूट पर वंदे भारत की डिमांड है। देशभर में अब

102 वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं। 3 करोड़ से ज्यादा लोग इन ट्रेनों से यात्रा कर चुके हैं। वंदे भारत ट्रेनों की शुरुआत पहली बार 15 फरवरी 2019 को मेक इन इंडिया स्कीम के तहत की गई थी। इस समय देश में 100 से ज्यादा वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं। वंदे भारत ट्रेनों का रूट देश के 280 से अधिक जिलों को आपस में जोड़ रही हैं। वंदे भारत ट्रेनों के उद्घाटन से पहले रेल मंत्रालय ने कहा, 'नई वंदे भारत ट्रेनें क्षेत्र के लोगों को स्पीड और आरामदायक यात्रा के साथ वर्ल्ड क्लास ट्रेन का अनुभव भी देंगी। यह ट्रेन स्वदेशी टेक्नोलॉजी से बनी है। इसमें कवच टेक्नोलॉजी, 360 डिग्री घूमने वाली कुर्सियां, दिव्यांगजनों की जरूरत के अनुकूल शौचालय और इंटीग्रेटेड ब्रेल साइनेज लगे हैं।

सुनीता विलियम्स की सुरक्षा को लेकर नासा नहीं चाहता रिस्क

- फरवरी तक बढ़ाई वापसी की तारीख, सुरक्षा को लेकर है संदेह

वॉशिंगटन (एजेंसी)। भारतीय मूल की एस्ट्रोनॉट सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर दो महीने से ज्यादा समय से स्पेस स्टेशन (आईएसएस) में फंसे हुए हैं। नासा ने उनकी वापसी के लिए अगले साल के फरवरी महीने तक का समय तय किया है। ऐसे में वह आठ महीने तक अंतरिक्ष में रहेंगी। नासा के इस

फैसले के पीछे कल्पना चावला की स्पेस में हुई मौत भी है। नासा प्रमुख बिल नेल्सन का कहना है कि अंतरिक्ष में हुए दो दुर्घटनाओं ने अंतरिक्ष यात्रियों के बिना बोइंग स्टारलाइनर को वापस लाने के फैसले को प्रभावित किया है। इसमें एक केस भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला की मौत का है और दूसरा 1986 का हादसा है। फरवरी, 2003 को कल्पना चावला की मौत हो गई थी।

सैटेलाइट तस्वीरों ने किया ड्रैगन की चाल का खुलासा

चीन ने एलएसी के पास बनाए 10 नए हेलीपैड, भारत के लिए खतरा

बीजिंग (एजेंसी)। भारत से लगी सीमा के पास (एलएसी) के पास चीन अपना सैन्य बुनियादी ढांचा बढ़ाने में जुटी हुई है। सैटेलाइट तस्वीरों से पता चलता है कि चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा के करीब लगभग एक दर्जन हेलीपैड बनाए हैं। रिपोर्ट में बताया है कि पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) ने कुल दस हेलीपैड स्थापित किए हैं, जो एलएसी के पास महत्वपूर्ण स्थानों पर फैले हुए हैं।

लंबाई में 150 मीटर से अधिक ये हेलीपैड पीएलए की तेजी से सैन्य तैनाती क्षमताओं को बढ़ाने के रणनीतिक प्रयास का हिस्सा हैं। इन्हें रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण प्रमुख भारतीय स्थानों के विपरीत बनाया गया है, जिसमें दौलत बेग ओल्डी क्षेत्र भी शामिल है। इन हेलीपैड पर एम-17 जैसे मध्यम लिफ्ट हेलीकॉप्टरों को

उतारा जा सकता है। इसका मतलब है ये ऊंचाई वाले क्षेत्रों में चीन की परिचालन क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने के लिए तैयार हैं। देपसांग और गोगरा जैसे महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्रों के पास इनकी स्थिति से साफ पता चलता है कि इनका ध्यान तेजी से तैनाती और रसद सहायता में सुधार करने पर है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पीएलए अपना ध्यान पेट्रोल पॉइंट 13 के चिप चिप सेक्टर, हॉट स्प्रिंग्स और गोगरा क्षेत्रों की ओर केंद्रित कर रही है। हेलीपैड का निर्माण तेजी से चल रही चीनी सैन्य तैयारियों के व्यापक पैटर्न का हिस्सा है। सैन्य ढांचे के निर्माण में तेजी भारत और चीन के बीच बढ़ते तनावपूर्ण संबंधों की पृष्ठभूमि में हुई है। जून 2020 में गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प के बाद सीमा पर गतिरोध बढ़ गया था।

समय को तोड़ कर नया समय पैदा करना सिर्फ़ कला में ही संभव है : उदयन वाजपेयी

सिने क्लासिक में रूसी मास्टरपीस 'मिरर' दिखाई गई

भोपाल। समय को तोड़ कर नया समय पैदा करना सिर्फ़ कला में ही संभव है और तार्कोवस्की की फ़िल्में ये अनुभव बखूबी कराती हैं। ये बात प्रसिद्ध कवि-लेखक-आलोचक उदयन वाजपेयी ने कही। वे सिने क्लासिक के अन्तर्गत प्रदर्शित की गई आंद्रेई तार्कोवस्की की प्रसिद्ध फ़िल्म 'मिरर' और निदेशक के परिचय में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि तार्कोवस्की का सिनेमा एक नया अनुभव रचता है जो आम परंपरागत व्यावसायिक फ़िल्मों से एकदम अलग है। स्मृतियों की तरह क्रमानुसार नहीं। बेहतर होगा इस फ़िल्म को जल्दी समझने की कोशिश न करें, उसको अपने साथ रहने दीजिए कुछ दिन फिर आप पायेंगे कि उससे जुड़ा पायेंगे।

1975 में प्रदर्शित हुई 'मिरर' 1975 की तत्कालीन रुस (सोवियत संघ) पर आधारित ड्रामा फ़िल्म है जो एक आत्मकथ्यात्मक और अपरंपरागत रूप बनाई गई सिनेमाई कविता है। फ़िल्म में निदेशक के पिता आसेनी तारकोव्स्की की कविताएँ उन्हीं की आवाज़ में शामिल की गई हैं। मिरर को एक ग़ैर-रेखीय कथा के रूप में रचा गया है जो एक मरते हुए कवि की स्मृतियों के इर्द-गिर्द घूमती है। इसे अब तक की महान फ़िल्मों में गिना जाता है और आंद्रेई तार्कोवस्की की सर्वश्रेष्ठ कृति कहा जाता है। रंगीन, सफ़ेद-केल, सीपिया टोन में फ़िल्म, उसका कथानक, ट्रीटमेंट, संगीत और शॉट टेकिंग एक अलग दुनिया रचते हैं। फ़िल्म का प्रदर्शन शिवाजी नगर स्थित महिला चेतना मंच के सभागार में किया गया जिसमें बड़ी संख्या में रसिक दर्शक उपस्थित थे। फ़िल्म के बाद फ़िल्म की समीक्षा चर्चा में भी दर्शकों ने उत्साह से भाग लिया।

केरल में आरएसएस की 3 दिन की बैठक शुरू

मोहन भागवत और जेपी नड्डा मौजूद, वायनाड़ रिपोर्ट पेश

नया बीजेपी अध्यक्ष और 4 राज्यों में चुनाव पर चर्चा संभव

पलक्कड़ (एजेंसी)। केरल के पलक्कड़ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) की 3 दिन की वार्षिक समन्वय बैठक शनिवार सुबह 9 बजे से

शुरू हुई। मीटिंग में संघ चीफ मोहन भागवत, सहकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले समेत भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा और संगठन महासचिव बीएल संतोष शामिल हुए। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस मीटिंग में नए भाजपा अध्यक्ष के नामों पर चर्चा हो सकती है। 4 राज्यों की विधानसभा चुनाव की रणनीति पर भी बातचीत हो सकती है। बैठक में संघ के 32 सहयोगी संगठनों के 300 कार्यकर्ता शामिल हुए। इसका उद्देश्य संगठनों के बीच बेहतर तालमेल बनाने पर चर्चा करना है। मीटिंग में वायनाड में आई लैंडस्लाइड में आरएसएस द्वारा पहुंचाई गई मदद के बारे में जानकारी दी गई।

कोलकाता केस में पुलिस का सिविक वॉलंटियर गिरफ्तार

- जूनियर डॉक्टरों के प्रोटेस्ट में शराब पीकर बाइक चलाई, छात्र को टक्कर मारी थी

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में ट्रेनी डॉक्टर से रेप और हत्या के विरोध में जूनियर डॉक्टरों के प्रदर्शन का आज 23वां दिन है। रविंद्र भारती यूनिवर्सिटी के पास चल रहे डॉक्टरों के प्रदर्शन के दौरान शनिवार रात 2 बजे एक शख्स शराब के नशे में बाइक लेकर भीड़ में घुस गया। इस दौरान एक प्रदर्शनकारी छात्र को उसने टक्कर मार दी, जिसमें उसे चोट आई है।

इस दौरान वहां पुलिस भी मौजूद थी, लेकिन उन्होंने बिना एक्शन लिए आरोपी को छोड़ दिया। इसके बाद डॉक्टरों ने उसकी गिरफ्तारी को लेकर 5 घंटे तक बीटी रोड जाम कर दिया। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, आरोपी के बाइक पर कोलकाता पुलिस का स्टिकर लगा हुआ था। वह कोलकाता पुलिस का सिविक वॉलंटियर है। रेप-मर्डर का आरोपी संजय रॉय भी पुलिस में सिविक वॉलंटियर था। कोलकाता पुलिस के मुताबिक, आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। उस सिविक वॉलंटियर टीम से भी हटा दिया गया है। कलकत्ता हाईकोर्ट ने 30 अगस्त को रेप-मर्डर केस के विरोध में प्रदर्शन करने वाले छात्र सायन लाहिड़ी को रिहा करने का आदेश दिया है। सायन पर बिना परमिशन के नबन्ना रैली निकालने का आरोप था। इसी रैली में हिंसा के दौरान कई पुलिसकर्मी घायल हुए थे। कोर्ट ने पुलिस को फटकार लगाते हुए कहा कि अधिकारियों को इसे तरीके से संभालना चाहिए था।

छत्तीसगढ़ में कोयले के लिए जंगल की कटाई फिर शुरू

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले के जैव विविधता से भरपूर हसदेव अरंड क्षेत्र में परसा ईस्ट और केते बासेन चरण-दो कोयला खदान के लिए पेड़ों की कटाई शुक्रवार को स्थानीय ग्रामीणों के विरोध के बीच फिर से शुरू हो गई। कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए इलाके में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया है। स्थानीय ग्रामीणों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने आरोप लगाया कि पुलिस ने हसदेव क्षेत्र में कोयला खनन का विरोध कर रहे 100 से अधिक ग्रामीणों को हिरासत में लिया है। हालांकि पुलिस ने इस आरोप से इनकार किया। पीईकेबी खदान राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड को आवंटित है। राज्य वन विभाग द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है कि शुक्रवार को उदयपुर विकास खंड में प्रस्तावित 74.130 हेक्टेयर वन भूमि (पीईकेबी चरण-दो खदान के लिए) में से 32 हेक्टेयर में पेड़ों की कटाई शुरू की गई। अब तक 3,694 पेड़ काटे जा चुके हैं। शेष पेड़ों की कटाई जारी है। बयान में कहा गया है कि चूंकि यह क्षेत्र संवेदनशील है, इसलिए पेड़ों की कटाई शांतिपूर्ण ढंग से करने के लिए जिला पुलिस बल, जिला प्रशासन और वन अधिकारियों की एक संयुक्त दल का गठन किया गया है। इसमें कहा गया है कि खदान क्षेत्र के पास के गांवों के कुछ निवासी इस कार्य में बाधा डाल रहे थे। उन्हें प्रक्रिया में कोई गड़बड़ी नहीं करने के लिए राजी किया गया है। साल 2007 में आवंटित पीईकेबी ब्लॉक में 762 हेक्टेयर भूमि में खनन का पहला चरण, केंद्रीय वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा 2012 में अंतिम अनुमोदन के बाद 2013 में शुरू किया गया था और वहां खनन पूरा हो गया है।

शंभू बॉर्डर पर किसान आंदोलन में पहुंचीं पहलवान विनेश फोगाट

- सम्मान किया गया, बोलीं-हक मांगने वाला हर व्यक्ति राजनेता नहीं होता, धर्म से भी ना जोड़ें

अमृतसर (एजेंसी)। पेरिस ओलिंपिक से डिसक्वालिफाई हुई पहलवान विनेश फोगाट आज शनिवार को पंजाब-हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर चल रहे किसान आंदोलन में पहुंचीं। यहां किसान नेताओं ने मंच पर उनको सम्मानित किया। किसानों की तरफ से आंदोलन को 200 दिन पूरे होने पर यहां कार्यक्रम रखा गया था। इसके बाद विनेश फोगाट खनौरी बॉर्डर पर चल रहे किसान आंदोलन में शामिल होंगी। इस मौके पर विनेश फोगाट ने कहा-आज किसानों को यहां बैठे 200 दिन हो गए, लेकिन जोश पहले दिन जैसा ही है। आपकी बेटी आपके साथ है। मैं सरकार को कहती हूं कि देश के लोग हक की आवाज उठाते हैं तो हर बार यह पॉलिटिकल नहीं होता। इसे किसी धर्म से नहीं जोड़ना चाहिए। विनेश ने आगे कहा- मैं सरकार से आग्रह करती हूं कि उन्हें सुनना चाहिए। उन्होंने पिछली बार अपनी गलती स्वीकार की थी। उन्हें अपने वादे पूरे करने चाहिए। इसे हल करना सरकार की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। कांग्रेस के विधानसभा

चुनाव में टिकट दिए जाने के सवाल पर विनेश ने कहा कि मुझे नहीं पता पॉलिटिक्स का। मुझे पॉलिटिक्स का इतना नॉलेज नहीं है। सच्चाई बता रही हूं कभी में इतना डीप में गई नहीं हूं। खेलों के बारे में पूछेंगे तो मैं बता सकती हूं, लेकिन हर जगह पर किसान हैं।

वफ्फ बोर्ड संशोधन बिल की दूसरी मीटिंग में जोरदार हंगामा

- आठ घंटे चली इस मीटिंग में तमाम पक्षों को सुना गया, पक्ष-विपक्ष में नोकझोंक

नई दिल्ली (एजेंसी)। वफ्फ बोर्ड संशोधन बिल के लिए बनाई गई संयुक्त संसदीय समिति की दूसरी मीटिंग शुक्रवार को जोरदार हंगामा हुआ। भाजपा सांसद जगदंबिका पाल की अध्यक्षता में चल रही इस मीटिंग में समिति ने ऑल इंडिया सुन्नी जमायितुल उलमा मुंबई, दिल्ली स्थित इंडियन मुस्लिम फॉर सिविल राइट्स, उत्तर प्रदेश सुन्नी वफ्फ बोर्ड और राजस्थान बोर्ड ऑफ मुस्लिम वफ्फ के लोगों को बुलाया गया और इस मुद्दे पर उनके विचारों को सुना गया। न्यूज एजेंसी के सूत्रों के अनुसार, बैठक में शामिल इन संस्थानों ने बिल में कई मुद्दों पर अपनी चिंता जताई। अपनी बात रखते हुए उन्होंने कहा कि जिला कलेक्टरों को वफ्फ संपत्तियों का सर्वे करने और निर्णय लेने के लिए अंतिम फैसला लेने की शक्तियां दी जा रही हैं, जो कि गलत है। इसके अलावा इन सभी ने वफ्फ बोर्ड में प्रस्तावित संशोधनों को लेकर सरकार के इरादे पर भी सवाल उठाया। मुस्लिम संगठनों द्वारा उठाई गई चिंताओं का समर्थन करते हुए तमाम विपक्षी दलों के सांसदों ने सदन में हंगामा किया।

तकनीक ने दुनिया को बदला : हरिवंश

'हरिवंश : पत्रकारिता का लोकधर्म' पुस्तक का लोकार्पण

भोपाल। राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश ने कहा है कि 300-400 वर्षों में विचार ने इतिहास को बदला, लेकिन नब्बे के दशक के बाद 'तकनीक' ने दुनिया को बदला। हरिवंश आज सप्रे संग्रहालय में अपने ऊपर प्रकाशित पुस्तक 'हरिवंशः पत्रकारिता का लोकधर्म' के लोकार्पण व चर्चा कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। पुस्तक को प्रलेक प्रकाशन ने छापा है। लोकार्पण समारोह में पुस्तक के प्रकाशक जितेंद्र पात्रो भी उपस्थित थे। समारोह को संबोधित करते हुए हरिवंश ने कहा कि मुख्यधारा की पत्रकारिता आदर्शों से दूर चली गई। समारोह को संबोधित करते हुए 'नवनीत' के संपादक विश्वनाथ सचदेव ने कहा कि हरिवंश की

पत्रकारिता ही लोकधर्म की पत्रकारिता है। पत्रकारिता का धर्म ही है 'लोक' की चिंता। आजादी के दौर में पत्रकारिता विशेष कर हिंदी पत्रकारिता ने समाज को एक दिशा दी, किंतु धीरे-धीरे वह अपने उद्देश्य से भटक गई। जबसे दृश्य माध्यम आया है, पत्रकारिता के स्वरूप में बदलाव आया है। विश्वनाथ सचदेव ने कहा कि हरिवंश जैसे व्यक्ति पत्रकारिता छोड़कर राजनीति में चले गए यह राजनीति के लिए बड़ी उपलब्धि हो सकती है, किंतु पत्रकारिता की बड़ी क्षति है।

किताब के संपादक कृपाशंकर चौबे ने कहा कि लेखन बहुत ही आसान कार्य है, लेकिन 'संपादन' एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य है। उन्होंने कहा कि विश्वनाथ सचदेव और हरिवंश जी जैसे लोगों की बदौलत ही पत्रकारिता का लोकधर्म आज बचा हुआ है। सप्रे संग्रहालय के संस्थापक निदेशक विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि हरिवंश जी आई किताब पत्रकारिता की धरोहर है। कार्यक्रम के दूसरे चरण में पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने तीनों विभूतियों से पत्रकारिता के मौजूदा परिदृश्य को लेकर सवाल किये। आरंभ में संग्रहालय की ओर से डॉ. शिवकुमार अवस्थी, डॉ. रत्नेश, अरविंद श्रीधर ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन मीडिया शिक्षक लालबहादुर ओझा ने किया तथा आभार प्रदर्शन वरिष्ठ टीवी पत्रकार राजेश बादल ने किया।

एमपी के चीता प्रोजेक्ट पर बनेगी वेब सीरीज

दुनिया को दिखाई जाएगी भारत की कामयाबी, 17 सितंबर के आसपास से शुरू होगी शूटिंग

भोपाल। अफ्रीका से लाए गए चीतों की बसाहट को लेकर चिंताओं के बीच, केंद्र ने 'प्रोजेक्ट चीता' पर चार-भाग की वेब सीरीज के फिल्मांकन के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। इसके जरिए भारत की प्रयासों को फिल्माया जाएगा। वेब सीरीज की शूटिंग 17 सितंबर के आसपास शुरू हो सकती है। 17 सितंबर को ही पहली बार नामीबिया से चीता लाए गए थे। एनटीसीए के उप महानिरीक्षक वैभव चंद्र माथुर ने 21 जुलाई को मध्यप्रदेश के मुख्य वन्यजीव वार्डन को लिखे पत्र में कहा कि प्राधिकरण की आठवीं तकनीकी समिति ने चीता को दूसरे महादेश में बसाने की दुनिया की पहली पहल 'प्रोजेक्ट चीता' पर एक वेब सीरीज के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। पत्र में कहा गया है कि इस संबंध में, यह अनुरोध किया जाता है कि कृपया मेसर्स शेन फिल्म्स और प्लांटिंग प्रोडक्शंस को मानक नियमों और शर्तों के अनुसार कूनो राष्ट्रीय उद्यान और गांधी सागर वन्यजीव अभयारण्य में फिल्मांकन करने की सुविधा प्रदान की जाए, ताकि देश के प्रयासों को दुनिया के सामने प्रदर्शित किया जा सके। राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन ने छह अगस्त को प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। प्रस्ताव के अनुसार, वेब सीरीज को डिस्कवरी नेटवर्क पर 170 देशों में विभिन्न भाषाओं में प्रसारित किया जाएगा। वेब सीरीज का उद्देश्य परियोजना की संकल्पना, चीतों को भारत लाने में आई कठिनाइयों, चीतों की स्थिति और भविष्य की अपेक्षाओं को उजागर करना है। प्रस्ताव में कहा गया है कि इसका लक्ष्य लोगों को 'इस विशाल परियोजना की बारीकियों को समझाना' है। पूर्व में एनटीसीए और भारतीय वन्यजीव संस्थान के साथ

तालमेल कर चुके वेब सीरीज बनाने वालों ने परियोजना के क्रियान्वयन के लिए 50 लाख रुपए की वित्तीय सहायता को लेकर मध्य प्रदेश पर्यटन और 'एमपी टाइगर फाउंडेशन' से भी संपर्क किया है। एक अधिकारी ने पहचान जाहिर नहीं करने का अनुरोध करते हुए कहा कि वित्तीय सहायता संभव नहीं है, लेकिन हम निर्देशानुसार वेब सीरीज के फिल्मांकन के लिए पूरा सहयोग देंगे। भोपाल स्थित वन्यजीव कार्यकर्ता अजय दुबे ने कहा कि फिल्म बनाने की जल्दबाजी पर सवाल उठाते हुए कहा कि इस परियोजना के सामने 'कई चुनौतियां हैं, जिनका पहले समाधान किया जाना चाहिए।' उन्होंने वेब सीरीज को फिल्माने की अनुमति देने की प्रक्रिया पर भी सवाल उठाया और कहा कि रिकॉर्ड से पता चलता है कि चीता परियोजना संचालन समिति ने 'इस मुद्दे पर कभी चर्चा नहीं की।' इस समिति का गठन पिछले साल मई में परियोजना की प्रगति की निगरानी और समीक्षा करने तथा इसके क्रियान्वयन पर मध्यप्रदेश वन विभाग और एनटीसीए को सलाह देने के लिए किया गया था। अब तक अफ्रीका से 20 चीते भारत लाए जा चुके हैं। सितंबर 2022 में नामीबिया से आठ और फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से 12 चीते लाए गए। कुछ चीतों को शुरू में जंगल में छोड़ दिया गया था, लेकिन पिछले साल 13 अगस्त तक तीन चीतों की सेप्टीसीमिया से मौत हो जाने के बाद उन्हें वापस बाड़ों में भेज दिया गया था। खुले में घूमने वाला एकमात्र चीता पवन मंगलवार को मृत पाया गया। अधिकारियों ने उसकी मौत का प्राथमिक कारण डूबने को बताया। पिछले सप्ताह एक बैठक में, संचालन समिति ने देश के मध्य क्षेत्रों से मानसून की वापसी के बाद, जो आमतौर पर अक्टूबर के पहले सप्ताह तक होता है, चीतों और उनके शावकों को चरणबद्ध तरीके से जंगल में छोड़ने का फैसला किया। इस परियोजना की शुरुआत में चीतों की मौत के कारण आलोचना हुई थी। हालांकि, इस साल 12 शावकों के जन्म के बाद, अधिकारियों का कहना है कि परियोजना सही दिशा में आगे बढ़ रही है। भारत आने के बाद से तीन मादा और पांच नर समेत आठ वयस्क चीते मर चुके हैं। भारत में 17 शावकों का जन्म हुआ है, जिनमें से 12 जीवित हैं। अधिकारियों के अनुसार, भारत ने वर्ष के अंत तक चीतों का एक नया जत्था लाने के प्रयासों में भी तेजी ला दी है। जमीनी स्तर पर बातचीत के लिए एक प्रतिनिधिमंडल जल्द ही दक्षिण अफ्रीका का दौरा करेगा। वहीं, पता चला है कि केन्या के साथ भी बातचीत चल रही है और एक समझौता ज्ञापन को अंतिम रूप दिया जा रहा है। 'भारत में चीता को बसाने के लिए कार्य योजना' में दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया और अन्य अफ्रीकी देशों से पांच वर्षों के लिए प्रति वर्ष लगभग 12-14 चीते लाने की बात कही गई है। चीतों का अगला जत्था गांधी सागर लाया जाएगा, जिसे दूसरे स्थान के रूप में चुना गया है, क्योंकि कूनो में पहले ही 20 चीतों को रखने की क्षमता पार हो चुकी है।

दतिया और मुरैना को मिलेगी डिफेंस कॉरीडोर की सौगात

सीएम मोहन यादव ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मिलकर की मांग

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शुक्रवार को दिल्ली दौरे पर रहे। इस दौरान सीएम मोहन कई दिग्गज केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात की। जिसके बाद से प्रदेश को कई सौगातें मिली हैं। इसमें दतिया और मुरैना को डिफेंस कॉरिडोर बनाने की मांग भी शामिल है। बता दें, कि यूपी में रक्षा उद्योग गलियारा बनने की योजना प्रस्तावित है। इसमें सीएम मोहन ने रक्षामंत्री राजनाथ सिंह से एमपी के दो जिलों को शामिल करने की अपील की है। डॉ. मोहन यादव ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से उनके घर पर मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने मध्य प्रदेश में रक्षा क्षेत्र में निवेश के प्रस्तावों पर चर्चा की। उन्होंने रक्षा मंत्री से उत्तर प्रदेश में बन रहे रक्षा औद्योगिक गलियारे में मध्य प्रदेश के दतिया और मुरैना जिलों को शामिल करने का अनुरोध किया। सीएम मोहन ने राजनाथ सिंह से उत्तर प्रदेश में प्रस्तावित रक्षा औद्योगिक गलियारे में दतिया और मुरैना को शामिल करने का अनुरोध किया। उन्होंने सिंह को यह भी बताया कि हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) ने मध्य प्रदेश में निवेश करने में रुचि दिखाई है। रक्षा मंत्री ने यादव को इस संबंध में मदद का आश्वासन दिया।

मूंग खरीदी का भुगतान नहीं होने पर सिंघार ने सरकार को घेरा

नेता प्रतिपक्ष ने कहा-15 दिन हो गए,मूंग खरीदी का भुगतान नहीं हुआ

कर दी मांग, सागर लोकसभा सीट का चुनाव शून्य करे चुनाव आयोग

भोपाल। सागर लोकसभा सीट के एक बीजेपी कार्यकर्ता द्वारा अकेले 15 वोट डालने का दावा करने और इसका वीडियो वायरल करने के मामले में कांग्रेस ने आपत्ति करते हुए चुनाव आयोग से मांग की है कि सागर लोकसभा सीट का चुनाव शून्य घोषित किया जाए। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने इस वीडियो के सामने आने के बाद बीजेपी को भी घेरा है। इसके साथ ही मूंग खरीदी का भुगतान नहीं किए जाने के मामले में भी सिंघार ने एमपी सरकार को घेरा है। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर ट्वीट कर वह वीडियो पोस्ट किया है जिसमें एक व्यक्ति द्वारा दावा किया जा रहा है कि उसने लोकसभा चुनाव में अकेले 15 वोट डाले हैं। सिंघार ने इस वीडियो के साथ लिखा है कि मैं इसे लोकतंत्र का अपमान मानता हूं....15 वोट मैंने डाले... 13 बूथों पर कांग्रेस का एजेंट बैठने नहीं दिया, ये बात कोई और नहीं भाजपा का कार्यकर्ता कह रहा है.. उन्होंने लिखा है कि नरेंद्र मोदी बताएं कि क्या यही तरीका है बीजेपी के चुनाव जीतने का, मैं इसे लोकतंत्र का अपमान मानता हूं और चुनाव आयोग से कहना चाहता हूं कि आज ही इस मामले को संज्ञान में ले और सागर का निर्वाचन शून्य घोषित करें। सिंघार ने एक अन्य ट्वीट में लिखा है कि मुख्यमंत्री से आग्रह है कि अन्नदाता की मेहनत का पैसा तो मत अटकाइए। 26 जून से 5 अगस्त तक प्रदेश में एमएसपी पर ग्रीष्म कालीन मूंग की खरीद की गई थी। मूंग खरीद को बंद हुए 15 दिन हो गए। इसके बाद भी एमपी के हजारों किसानों को अभी तक मूंग का भुगतान नहीं हुआ। मूंग खरीदी प्रारंभ से जिन किसानों ने मूंग दी उनका भी भुगतान नहीं जबकि सरकार ने 7 दिन में भुगतान का दावा किया था। सिंघार ने सवाल किया कि क्या हुआ दावे का? दावा झूठा निकला। फसल का भुगतान समय पर नहीं होता, तो किसान अपने परिवार का भरण-पोषण और अगली फसल की तैयारी कैसे करेगा ? उन्होंने लिखा है कि एमपी सरकार को कम से कम किसानों के साथ तो ऐसा जुल्म नहीं करना चाहिए, भुगतान नहीं होने से परेशान किसान किससे शिकायत करने जाएं।

देश-दुनिया में बढ़ी अपनी चंदेरी की साड़ियों की मांग

चंदेरी में तैयार होती हैं सोने की साड़ियां, गोल्ड धागे से बनी साड़ियों की मांग राजघराने में

भोपाल। देश में अति प्राचीन इतिहास और पुरातन नगरी चंदेरी अपने प्राचीन किला, कोठी और इमारतों के लिए देश जानी जाती है। यहां चंदेरी के बुनकरों की बनाई साड़ी देश के अलावा विदेश में भी प्रसिद्ध है। चंदेरी के बुनकर सोने की साड़ी भी तैयार करते हैं। यह साड़ी राजघरानों की मांग पर तैयार की जाती है, जिसकी कीमत लाखों में है। चंदेरी का इतिहास

हजारों साल पुराना है। चंदेरी अपने प्राचीन इतिहास, प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ प्राचीन किला और बावड़ी के लिए भी देश- विदेश में अलग पहचान रखता है। यहां दूर-दूर से पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। ऐसे में चंदेरी की साड़ी पूरे विश्व में प्रसिद्ध है, यहां के बुनकरों द्वारा 2500 से लेकर 2 लाख तक की साड़ी तैयार की जाती है। चंदेरी साड़ी के व्यापारी अमन टूनटुनिया बताते हैं कि चंदेरी की साड़ी का क्रेज आज से नहीं बल्कि प्राचीन काल से है। राजतंत्र में भी राजा महाराजाओं की पहली पसंद चंदेरी की साड़ी हुआ करती थी। चंदेरी में उनके पूर्वजों द्वारा देश के कई राज परिवार के लिए ऑर्डर पर साड़ियां तैयार की जाती हैं, जिनमे सोने से भी साड़ी बनाई जाती थी।

राजधानी में जल्द लौटेगी बेगमों के दौर की व्यवस्था

मस्जिद में नमाज अदा करेंगी महिलाएं, मस्जिद नजमुल से शुरुआत

भोपाल। राजधानी भोपाल में कभी परंपरा में रही महिलाओं की मस्जिद में जाकर नमाज अदा करने की व्यवस्था एक बार फिर शुरू होने जा रही है। फिलहाल, यह व्यवस्था जुमा की नमाज से हो रही है। भविष्य में इसको बाकी दिनों और अन्य समय के लिए भी शुरू किया जा सकता है। सूत्रों के मुताबिक, इस शुक्रवार को होने

वाली जुमा की नमाज शहर की महिलाओं के लिए खास होगी। ईदगाह क्षेत्र स्थित मस्जिद नजमुल में होने वाली जुमा की नमाज में महिलाओं के लिए भी नमाज अदायगी के खास इंतजाम किए गए हैं। मस्जिद की प्रबंधन कमेटी से जुड़े लोगों का कहना है कि यहां नमाज पढ़ने आने वाली महिलाओं के लिए पर्दे के इंतजाम के साथ अलग फ्लोर पर इंतजाम किए गए हैं। उन्होंने बताया कि इनके वुजू आदि के इंतजाम भी अलग से किए गए हैं। गौरतलब है कि मस्जिद नजमुल में जुमा की नमाज का खुतबा दोपहर एक बजे शुरू होता है। यहां आने वाली महिलाएं एक अलग फ्लोर पर खुतबा भी सुन पाएंगी। साथ ही ईमाम द्वारा पढ़ाई जाने वाली नमाज में जमात के साथ शरीक हो सकेंगी। रियासत भोपाल की विरासत महिला शासकों के हाथों में रही है। इसके चलते शहर में मौजूद सैंकड़ों मस्जिदों में से अधिकांश के नाम महिलाओं के नाम पर हैं। इनमें मस्जिद कुलसुम बिया, मस्जिद मांजी साहिबा, मस्जिद नन्हीं बिया जैसी कई मस्जिदें शामिल हैं। जानकार कहते हैं कि शहर की इन मस्जिदों में से अधिकांश में महिलाओं की नमाज के लिए अलग से इंतजाम किए गए थे। बेगमों के शासनकाल तक यहां महिलाओं का मस्जिदों में नमाज पढ़ने जाने का रिवाज आम हुआ करता था। एशिया की सबसे बड़ी कही जाने वाली ताजुल मसाजिद में लंबे अरसे से महिलाओं के लिए अलग से नमाज पढ़ने के इंतजाम हैं। यहां महिलाओं के अलग से वॉशरूम, वुजुखाने और नमाज के लिए जगह चिन्हित है। इधर, राजधानी के कमर्शियल इलाके एमपी नगर में प्रेस कॉम्प्लेक्स की मस्जिद रब्बानी का रिनोवेशन हाल में ही किया गया है। यहां भी महिलाओं के लिए नमाज पढ़ने के अलग इंतजाम किए गए हैं। यहां आने वाली महिलाओं के लिए आरामगाह, लाइब्रेरी, बॉथरूम और नमाज के माकूल इंतजाम भी किए गए हैं। राजधानी की ईदगाह को प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे देश की सबसे बड़ी ईदगाह कहा जा सकता है। यहां बेगम शासनकाल के महिलाओं के इंतजाम अब भी दिखाई देते हैं। इसके अलावा मोती मस्जिद, जामा मस्जिद, कुलसुम बिया जैसी कई पुरानी मस्जिदों में अब भी पुरानी व्यवस्थाएं दिखाई देती हैं। लेकिन पिछले लंबे अरसे से यहां महिलाओं की नमाज अदायगी की व्यवस्था बंद जैसी ही है। मुस्लिम महासभा अध्यक्ष मुनव्वर अली खान का कहना है, मुस्लिम बहुल शहर में मौजूद बाजारों के आसपास बड़ी संख्या में मस्जिदें मौजूद हैं। चौक बाजार, इब्राहिमपुरा, नदीम रोड़ जैसे बाजारों में महिलाओं की आवाजाही रहती है।

प्रदेश में जिला योजना समिति होंगी अब और सशक्त

प्रभारी मंत्री करेंगे फैसले,अब तक कलेक्टर थे शक्तिशाली

भोपाल। मध्य प्रदेश में विधानसभा और लोकसभा चुनावों के दौरान विशेष अधिकारों से लैस कलेक्टरों को अब हर निर्णय मंत्री की मंजूरी के बाद ही लेना होगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने हाल ही में मंत्रियों को उनके प्रभार जिले सौंपे हैं। अब जिला स्तर पर कौन सा विकास कार्य पहले किया जाएगा और कौन सा बाद में, इसका निर्णय प्रभारी मंत्री करेंगे। कलेक्टरों और कमिश्नरों के पास अब तक जो स्वतंत्रता थी, वह प्रभारी मंत्रियों के सक्रिय हस्तक्षेप के बाद समाप्त हो गई है। नई व्यवस्था के तहत जिला योजना समिति प्राथमिकताओं को निर्धारित करेगी, और विकास योजनाओं की स्वीकृति का अधिकार प्रभारी मंत्रियों के पास होगा। इस नई प्रणाली का उद्देश्य जिले के विकास कार्यों में राजनीतिक नेतृत्व और जवाबदेही को बढ़ावा देना है। अब कलेक्टरों को किसी भी महत्वपूर्ण निर्णय से पहले प्रभारी मंत्री से परामर्श करना होगा, जिससे विकास कार्यों में अनुशासन और संगठनात्मक तालमेल सुनिश्चित होगा। पिछले डेढ़ साल में, जब प्रभारी मंत्री नहीं थे, कलेक्टर और कमिश्नर ही जिले की पूरी व्यवस्था संभाल रहे थे। अब, प्रभारियों की नियुक्ति के बाद, जिला सरकार की प्रणाली फिर से लागू हो गई है। अब प्रत्येक तीन माह में जिला योजना समिति की बैठक आयोजित की जाएगी। इस समिति में 10 से 20 सदस्यों को शामिल किया जाएगा। पहले प्रभारी मंत्री न होने की वजह से कलेक्टर और कमिश्नर ही सभी कार्यों का संचालन कर रहे थे, लेकिन अब विधायकों से सभी विधानसभा क्षेत्रों के लिए आगामी चार वर्षों का विजन डॉक्यूमेंट तैयार करवाया गया है। सरकार इन विकास कार्यों के लिए 100 करोड़ रुपये खर्च करेगी। फंड की व्यवस्था सांसद और विधायक निधि के अलावा जन सहभागिता और राज्य सरकार के बजट से की जाएगी।

धार में पीठ पर डिवाइस लिए मिला अनजान पक्षी

नहाने गए युवक ने पकड़ा, वन विभाग की टीम हैरान

भोपाल। मध्य प्रदेश के धार जिले में एक अजीब वाकया सामने आया है। शाला गांव के एक व्यक्ति को नर्मदा नदी के किनारे एक पक्षी मिला जिसके पंख पर एक डिवाइस लगा हुआ था। उसने बिना देरी किए फौरन किसी रफ्तार दिखाते हुए पक्षी को पकड़ लिया। पक्षी से जुड़े हुए वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहे हैं। युवक हर दिन की तरह दिनचर्या के हिसाब से नदी में नहाने गया था। तभी उसे पास में ही कबूतर जैसा पक्षी दिखाई दिया। पक्षी को देखकर युवक को बड़ी हैरानी हुई क्योंकि उसके पंख से एक अजीब सी डिवाइस जुड़ी हुई थी। उसने देरी किए बिना इसकी सूचना पुलिस को दी दी। पुलिस ने पक्षी को अपने कब्जे में लेकर वन विभाग को सौंप दिया है। पुलिस और वन विभाग अब यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि यह पक्षी कहां से आया है और इसके पंख पर जीपीएस किसने लगाया है। धामनोद थाना प्रभारी ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि शाला गांव के रहने वाले एक युवक ने हमें इस पक्षी के बारे में सूचित किया था। पक्षी के पंख पर जीपीएस डिवाइस लगा हुआ मिला है। हम यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि यह यहां कैसे आया। वन विभाग के अधिकारी से बात करने पर बताया कि यह पक्षी किसी समूह द्वारा छोड़ा गया होगा। आमतौर पर पक्षी प्रेमी अपने शोध के लिए पक्षियों पर जीपीएस लगाकर उन्हें छोड़ देते हैं। इससे उन्हें पक्षियों की उड़ान और उनके आवागमन के बारे में जानकारी मिलती है। फिलहाल वन विभाग इस पक्षी की जांच कर रहा है। यह पता लगाया जा रहा है कि यह किस प्रजाति का पक्षी है और यह कहां से आया है। साथ ही जीपीएस डेटा की भी जांच की जाएगी। इससे यह पता चल सके कि यह पक्षी कहां-कहां गया था।

प्रदेश में विकास योजनाओं को मिलेगी अधिक तेज गति

आ गया टीडीआर पोर्टल, नगर तथा ग्राम निवेश ने किया तैयार

भोपाल। प्रदेश में सरकारी विकास परियोजनाओं के लिये भूमि प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने और पारदर्शी बनाने के लिये नगर तथा ग्राम निवेश (टाउन एण्ड कंट्री प्लानिंग) ने हस्तांतरणीय विकास अधिकार पोर्टल (टीडीआर पोर्टल) तैयार किया है। यह पोर्टल एमपीएसईडीसी के माध्यम से तैयार हुआ है। इस पोर्टल को तैयार करने का उद्देश्य योजनाबद्ध और नियंत्रित विकास को प्रोत्साहित करना है। पोर्टल के माध्यम से भूमि स्वामी अपनी भूमि की विकास क्षमता को एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरित कर सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल में 12 अगस्त को हुए समारोह में टीडीआर पोर्टल को लांच कर नागरिकों को सुविधा प्रदान की थी। प्रदेश में कोई भी सरकारी एजेंसी, जिसे अपनी परियोजना के क्रियान्वयन के लिये किसी भूमि की आवश्यकता होती है, वह टीडीआर पोर्टल के माध्यम से उस भूमि को प्राप्त करने के लिये आवेदन कर सकती है। इसके बाद जिस भी भूमि स्वामी द्वारा शासकीय परियोजनाओं के लिये निःशुल्क भूमि दी जाती है, उसे उसकी समर्पित की गई भूमि के कम से कम दोगुने क्षेत्र के विकास अधिकार की पात्रता मिलती है। भूमि स्वामी स्वयं इन विकास अधिकारों का उपयोग कर सकता है या टीडीआर बैंक के माध्यम से इन्हें बेच सकता है।

इसके अतिरिक्त इस पोर्टल पर आम नागरिकों या किसी निर्माण संस्था द्वारा भी इन्हें खरीदा जा सकता है। टीडीआर पोर्टल के माध्यम से क्रेता और विक्रेता दोनों ही अपनी आवश्यकतानुसार एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं। टीडीआर पोर्टल पर समस्त वितरित किये गये विकास अधिकारों की सूची भी उपलब्ध रहेगी, जिसे देखा जा सकता है। टीडीआर पूर्णतः सुरक्षित एवं यूजर फ्रेण्डली है। यह भूमि अधिग्रहण की विकास क्षमता के उपयोग को सरकार और भू-स्वामी, दोनों के लिये लाभकारी बनाता है। मध्यप्रदेश में हस्तांतरणीय विकास अधिकार नियम-2018 प्रभावशील है। भूमि स्वामी द्वारा भू-स्वामित्व का निःशुल्क अभ्यार्पण करने पर उसे समर्पित की गई भूमि से कम से कम दोगुने क्षेत्र विकास अधिकार की पात्रता होगी। नियम के अंतर्गत इंदौर शहर के 4 मार्गों एवं भोपाल के मेट्रो कॉरिडोर को उत्पादन क्षेत्र अधिसूचित किया गया है। इंदौर और भोपाल के सम्पूर्ण नगर निगम क्षेत्र को अधिसूचित किया गया है। प्रदेश के बड़े नगरों जैसे इंदौर, भोपाल, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन की विकास योजनाओं में 24 मीटर एवं उससे अधिक चौड़ाई के मार्गों के अंतर्गत आने वाली भूमि को उत्पादन क्षेत्र अधिसूचित किया गया है। क्रियान्वयन संस्था द्वारा उत्पादन क्षेत्र हेतु विकास अधिकार प्रमाण-पत्र जारी करने की कार्यवाही की जा रही है।

पुस्तक समीक्षा

सुधा जुगरान
समीक्षक

सभी वर्गों के जीवन का लेखा-जोखा करतीं लघुकथाएं

लंबी कथाओं को पढ़ने के आदी पाठकों के सामने जब लघुकथाओं की पुस्तक हाथ में आती है, तो गद्य की एक विशिष्ट शैली से, उसका परिचय होता है।

लघुकथा लेखन एक अलग तरह की विशिष्ट कला है। लघुकथा एक छोटी कहानी नहीं है। यह कहानी का संक्षिप्त रूप भी नहीं है। यह विधा अपने एकांगी स्वरूप में, किसी भी एक विषय, एक घटना या क्षण पर आधारित होती है।

लघुकथा, 'गद्य कथा' का एक अंश है, जिसे एक ही बैठक में पढ़ा जा सकता है।

लघुकथा गद्य का बहुत ही सटीक रूप है, जिसमें रचनाकार बहुत थोड़े से शब्दों में बहुत बड़ी बात कह देता है, जिसे कभी-कभी एक पूरी लंबी कहानी या उपन्यास के ढेर सारे पात्र भी उतनी स्पष्टता व सार्थक तरीके से व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

सुप्रसिद्ध लेखक व संपादक सुरेश सौरभ जी के संपादन में संग्रहित साझा लघुकथा संग्रह 'घरों को ढोते लोग' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग 65 लघुकथाकारों का यह संग्रह लाजवाब है। इसकी लघुकथाएं हर वर्ग व प्रत्येक क्षेत्र में शोषित, वंचित लोगों की बात बहुत शिद्दत से करती हैं। शायद ही संपादक की नज़र से कोई क्षेत्र छूटा हो। लघुकथाओं का चयन काफी सतर्कता व कुशलता के साथ किया गया है। सुरेश जी एक कुशल संपादक होने के साथ-साथ बेहतरीन लेखक भी हैं। यही दोनों मिश्रित गुण उनकी इस पुस्तक में दिखाई देता है।

यूं तो पुस्तक की सभी लघुकथाएं अत्यंत सटीक व सशक्त हैं, फिर भी कुछ का जिक्र करना लाजिमी होगा। संकलन की पहली लघुकथा 'सलोनी' में डॉ.मिथिलेश दीक्षित जी ने कामवाली बाई का मार्मिक हार्दिक चित्रांकन किया है।

भीषण गर्मी के बाद बरसात का मौसम साधन संपन्न लोगों के लिए खुशनुमा पलों की सुगंध लेकर आता है। यशोधरा भटनागर की लघुकथा 'कम्मो' में, घर में काम कर रही नौकरानी से चाय की फरमाइश होती है, लेकिन वही नौकरानी 'कम्मो' जब अपने घर पहुँचती है, तो टपकती झोपड़ी और गीली लकड़ियों के कारण पेट की आग बुझानी भी मुश्किल हो जाती है।

बाल श्रम की आड़ में छोटी बालिकाओं के शोषण पर लिखी रश्मि लहर की लघुकथा, 'हिसाब-किताब' भी पाठकों के अंतस को झिंझोड़ देती है। लघुकथा 'धूल भरी पगडंडी' गांवों से युवा वर्ग के हो रहे पलायन पर सार्थक विमर्श करती नजर आती है।

अत्यंत कड़वा सत्य परोसती है लघुकथा 'कबाड़'। समाज का साधन संपन्न वर्ग, शो रूम में रखी महंगी वस्तुएं बिना आगा-पीछा सोचे खरीद लेता हैं। अपनी सुख-सुविधा को लेकर कोई भी समझौता करना, आम समाज को मंजूर नहीं होता, लेकिन मजदूर वर्ग, चाहे फिर वह सब्जीवाला, रिक्शावाला, प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन, कबाड़ी, घरों में काम करने वाले या कोई भी अन्य, उनसे 10-20 रुपए कम कराने का लोभ अक्सर संवरण नहीं कर पाते हैं। सुखद लगता है रश्मि चौधरी की लघुकथा, 'कबाड़' को पढ़ना, जहां एक गृहणी घर का कबाड़ एक कबाड़ वाले को बिना पैसे लिए दे देती है। जबकि वह पैसे देने के लिए लगातार बोलता रहता है।

'उपहार' देने का संबंध, हैसियत से अधिक देने वाले की भावना से होता है। इस तथ्य को बहुत से लोग नहीं समझ पाते हैं, इसीलिए शायद आज, संवेदनाएं व भावनाएं हृदय की दहलीज लांघने को तत्पर हैं। मनवीर कौर पाहवा की 'उपहार' मार्मिक लघुकथा है।

मार्टिन जॉन की शीर्षक लघुकथा, 'घरों को ढोते लोग' एक ऐसी लघुकथा है, जो बहुत से चित्र आंखों की परिधि में बिछा देती है। वस्तुतः समाज का चाहे कोई भी वर्ग हो, वह अपने घरों को ही ढो रहा है, यह अलग बात है कि कोई पेट की आग बुझाने के लिए ढो रहा है, तो कोई सुख-सुविधा कमाने के लिए ढो रहा है। यह एक ऐसी लघुकथा है, जो सभी वर्गों के समस्त जीवन का लेखा-जोखा पाठकों के सामने प्रस्तुत कर देती है।

लघुकथा, 'चैरैवति, चैरैवति' भी इसी भाव को आगे बढ़ाती है, अनेक कलाओं में माहिर, एक रिक्शावाले के माध्यम से।

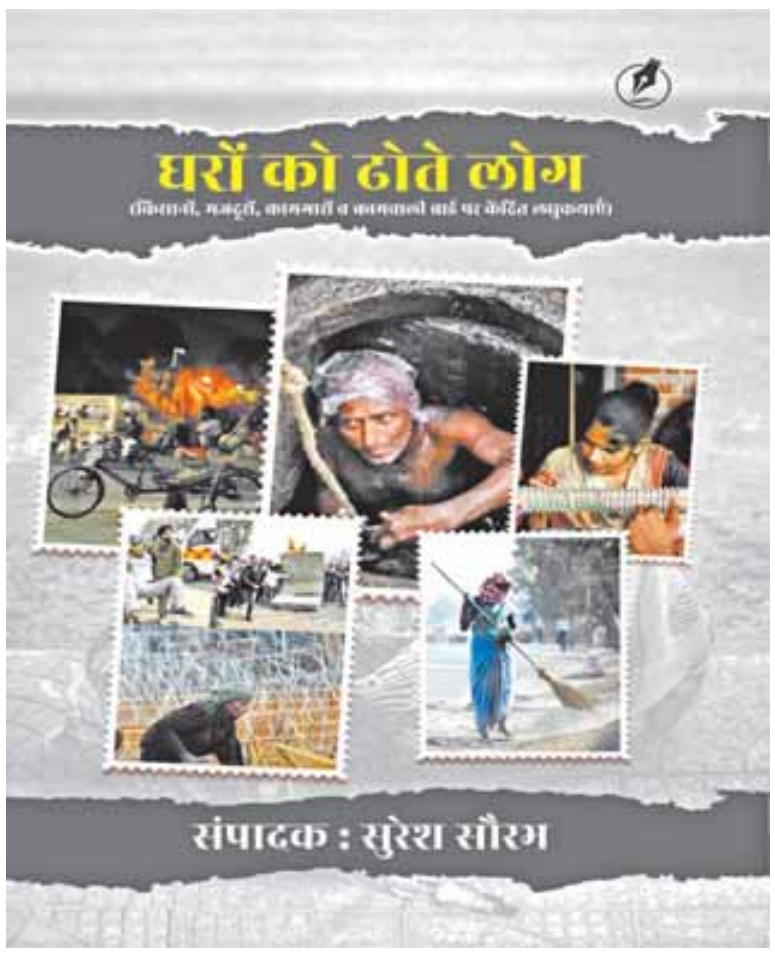

गरीब, अनपढ़ वर्ग अक्सर इल्जाम का अधिकारी हो जाता है। ऐसा ही बहुत कुछ कह जाती है पूनम 'कतरियार' मार्मिक लघुकथा, 'इज्जत'।

बहुत से अधखिले फूल हैं समाज में, जिन्हें अगर अपना लें तो इन्हें नवजीवन भी मिलेगा और देश को एक अच्छा नागरिक भी। साधन संपन्न घरों में जहां रोज ही अन्न की बरबादी होती है, वहीं ऐसे भी लोग हैं जिनको पेट भर खाना भी नहीं मिल पाता। इसी भाव की लघुकथा 'आस' की चर्चा करें, जिसमें,भीखू फर्श पर पड़े अनाज के दानें मजदूरी के रूप में मिल जाने पर बेहद खुश हो जाता है। सविता मिश्रा 'अक्षजा' की यह बेहतरीन लघुकथा है।

प्रत्येक लघुकथा का नायक चाहे वह कोई रिक्शावाला हो, ड्राइवर हो या कोई अन्य, उसके कांधों पर घर की जिम्मेदारियों का बोझ है और वह उसे ढोये हुए बस दौड़ लगा रहा है।

पुस्तक की लघुकथाएं अलग-अलग समस्याओं व विषयों को समेटती हैं। लघुकथा 'गुनाह' की सेल्स गर्ल की भी एक अपनी कहानी है। ग्राहक की चोरी के कारण वह मुसीबत में फंस जाती है। लघुकथा 'शुभ तिथि' घर के गृहप्रवेश का अलग दृश्य पाठकों के सामने लाती है, जिसमें नायक, घर बनाने वाले मजदूरों के साथ गृहप्रवेश की पार्टी करने का निश्चय करता है। वहीं सेवा सदन प्रसाद की 'भूख' लघुकथा दिल को दहला देती है। जब कोरोना महामारी में भूख से बेहाल गाँव पैदल जाते एक मजदूर को, काम भी मिलता है, तो लाशों को दफनाने का।

नोटबंदी पर लिखी सुधा भार्गव की लघुकथा 'नमक का कर्ज' बहुत कुछ सोचने को मजबूर करती है। क्या सच ही गरीबों के लिए देश की स्वतंत्रता का कोई मतलब नहीं है? उनके मात्र शिकारी ही बदले हैं? सुकेश साहनी की लघुकथा 'धूप-छांव' अमीर व गरीब के लिए बरसात का न होना, सूखा पड़ना, दोनों के लिए अलग-अलग परिदृश्य रचता है। कुछ लालची लोगों के लिए आपदा, अवसर लेकर आती है। मनोरमा पंत की लघुकथा 'बदलते रिश्ते' करुणा भरी वात्सल्यमयी कथा है।

बाल श्रम देश में अपराध है, लेकिन अगर किसी बच्चे का पिता न हो, तो उसकी भूख किस श्रेणी में आती है? जब यह 'यक्ष प्रश्न' बालक रघु, ठेकेदार से करता है, तो ठेकेदार के साथ-साथ पाठकों के पास भी कोई जवाब नहीं होता। सुनीता मिश्रा ने 'यक्ष प्रश्न' में बढ़िया संदेश दिया।

गरीब की मृत्यु उसके घरवालों के सिवा और किसी को व्यथित नहीं करती। लघुकथा, 'मजदूर मरा है' इस भाव व बात को अत्यंत सशक्त ढंग से चित्रित करती है, चित्रगुप्त की लघुकथा।

कोरोना महामारी पर आधारित राजेन्द्र पुरोहित की लघुकथा, 'शव-वाहन' उस वक्त की भयावह यादें ताजा कर देती है।

गरीब की भूख को पेट भर भोजन नहीं मिलता और अमीर के बच्चों की भूख खोलने के लिए इलाज किया जाता है, योगराज प्रभाकर की लघुकथा 'अपनी-अपनी भूख' की अंतिम पंक्ति इस सच्चाई पर जबरदस्त कटाक्ष करती है।

अरविंद सोनकर 'असर', सारिका भूषण, मिन्नी मिश्रा, इंद्रजीत कौशिक, मीरा जैन, गुलज़ार हुसैन, विजयानंद विजय, नीना मंदिलवार, डॉ.चंद्रेश कुमार छतलानी, राम कुमार घोटड़ आलोक चोपड़ा, कल्पना भट्ट, हर भगवान चावला, अविनाश अग्निहोत्री, राजेन्द्र वर्मा सहित सभी लघुकथाकारों की लघुकथाएं पाठकों की आंखों में कोई नमी जरूर छोड़ जाएंगी।

संग्रह की अंतिम दो लघुकथाएं, 'कैमरे' और 'हींग वटी' भी बाल श्रम पर जबरदस्त प्रहार करती प्रतीत होती हैं। यह दोनों लघुकथाएं संपादक व लेखक सुरेश सौरभ जी द्वारा रचित हैं। भीख मांगते बच्चों की भीड़ को, सरकार और समाज का प्रबुद्ध वर्ग कम तो करना चाहता है, लेकिन उनके सम्मान जनक जीवन-यापन के प्रयासों पर साथ नहीं देते।

चुनाव हो या कोई रैली अथवा शादी बारात की बात हो, इन जगहों पर काम करने वाले बच्चों के साथ अगर कोई दुर्घटना घट जाए तो इसकी जिम्मेदारी कोई आयोजक नहीं लेते, इस बात को बहुत स्पष्ट तरीके से सामने रखती है लघुकथा 'कैमरे'।

बहुत ही सटीक व स्तरीय लघुकथाओं की इस पुस्तक के सभी रचनाकारों को मैं हार्दिक बधाई देती हूं। संपादक सुरेश सौरभ जी का साधुवाद करती हूं।

पुस्तक-घरों को ढोते लोग (साझा लघुकथा संग्रह)
संपादक- सुरेश सौरभ
प्रकाशन-समृद्ध पब्लिकेशन शाहदरा नई दिल्ली
मूल्य-245/-

कविता

कैसे भूल जाऊँ

देवेन्द्र सिंह सिसौदिया

कैसे भूल जाऊँ
वो बचपन की
पांच पैसे की पांच गोली
बस इतने में ही
पा लेते थे खुशिया सारी।

कैसे भूल जाऊँ
दो जोड़ कपड़ों में
कट जाता था साल
कभी न की शिकायत
जान पापा की मज़बूरी।

कैसे भूल जाऊँ
उन शुरुआती दिनों की
छोटी सी सेलेरी
थी बहुत कम पर
देती थी खुशियाँ सारी।

कैसे भूल जाऊँ
बच्चों का डगमगाते हुए
रखना पहला कदम
आज वही कदम
नापते हैं दुनिया सारी।

कैसे भूल जाऊँ
तिनको - तिनको
से जोड़ बनाया वो घर
सोचा था कट जायेगी
इसमें जिंदगी सारी।

कैसे भूल जाऊँ
परोपकारी लोगों को
जो जीते थे औरों के लिए
पर अब, स्वार्थ से पट गई है
नाते - रिश्तेदारी सारी।

(लघुकथा)

वरदान बना अभिशाप

रामेश्वरम तिवारी

पौराणिक कथानुसार सतयुग में शंकर नाम का एक अजर-अमर व्यक्ति हुआ है। जो प्रतिदिन प्रातः स्नान के पश्चात अपने शरीर पर ताज़ा शव की भस्म का पाउडर मलता है। जिसकी व्यवस्था उसकी धर्मपत्नी पार्वती को करनी पड़ती थी। सुबह-सुबह की, रोज-रोज की अपनी इस चर्या से तंग आकर एक दिन पार्वती ने अपने हाथ ऊपर कर दिए। इस पर शंकर ने गुस्से में आकर भस्म में मिले कंकर को उठाकर आकाश में उछाला। कंकर देखते ही देखते भीमकाय भस्मासुर में बदल गया। शंकर ने अपने मानस-पुत्र को खुश होकर वरदान में जादुई कंगन दिया और बोले कि वह इसे पहनकर जिसके भी सिर पर अपना हाथ रख देगा वह व्यक्ति उसी जगह खड़ा-खड़ा राख में तब्दील हो जाएगा। पर शंकर द्वारा भस्मासुर को दिया गया आत्मघाती वरदान एक दिन उन्हीं के लिए बड़े अभिशाप का बायस बन गया।

चूँकि सर्वविदित है सृष्टि के आदिकाल से असुरों की दृष्टि स्त्री जाति के प्रति सम्मान की नहीं रही है। उनकी दृष्टि में वह मात्र भोग्या है। उसके लिए माँ, बहन, बेटी, पत्नी का एक ही मतलब है। एक दिन भस्मासुर की बुरी नज़र माता पार्वती पर पड़ गई। उसके मन के नीले नभ में बुरे विचार श्यामल मेघ उमड़ने-घुमड़ने लगे। उसने अपने जन्मदाता शंकर द्वारा प्रदत्त वरदान का उपयोग उन्हीं पर करने की ठानी। वो, तो भला हो विष्णु का कि उन्होंने विश्व सुंदरी का रूप धारण कर भस्मास्सुर को राख की ढेरी में बदल दिया वरना शंकर-पार्वती के साथ बड़ा कांड हो गया होता।

कलियुग में कुछ इसी प्रकार की नीति तथाकथित धर्मनिरपेक्षी विचारों द्वारा सत्ता पर हमेशा के लिए क़ब्ज़ा जमाए रखने के लिए अपनाई गई। जबकि देश की आज़ादी के दौरान लाखों निर्दोषों लोगों की जान की कीमत पर रोटी के टुकड़ों की तरह देश को दो विभाजित कर दिया गया था। बावजूद देश के तत्कालीन शासक द्वारा गुरु शुक्राचार्य के परम प्रिय शिष्यों के हाथों में वरदान रूपी ऐसा हथियार थमा दिया कि वे जिस जगह पर अपनी उँगली टेक देंगे वह उनकी हो जाएगी। और उनकी इस कार्रवाई पर सिवाय खुदा की आसमानी अदालत के दुनिया की किसी भी अदालत में सुनवाई नहीं होगी। उसका नतीजा यह हुआ कि एक दिन वरदान का फ़ायदा उठाकर कलियुगी भस्मासुर ने देश के नक़्शे पर उँगली रखकर दावा ठोक दिया कि यह देश उसके बाप की मिल्कियत है।

दुनिया भर में जम्हूरियत की डुगडुगी पीटने वाले देश में खलबली मच गई। अब यह देखना बड़ा रोचक और दिलचस्प होगा कि बुद्धि और चातुर्य के अधिपति, सनातन और सुरों के पक्षधर श्री के पति सिरफिरे के इस दावे से मुक्ति पाने के लिए कौन सी युक्ति भिड़ाते हैं।

कविता

फूल

लाल बहादुर श्रीवास्तव

कितना कुछ कहते हैं ये फूल
मुस्कान बिखेरते हर पल फूल
जगभर को मुस्कराने की सदा
प्रेरणा देते हर समय ये फूल...
न टकरार आपस में न झगड़ा
अपनीअपनी डाली पर रैन बसेरा
रंग-बिरंगे मनभावन मनभावन
पुलकित हो जाता देख हृदय कण ...
क्षणिक जिंदगी इन फूलों की
फिर भी पल पल हंसते हंसाते फूल
कितना कुछ सहते हैं जीवन में
कांटों के बीच रहकर जीवन भर
बयां नहीं करते दुख अपना फूल...
अपने आचरण संस्कारों से जग में
खुश्बु ही खुश्बू लुटाते हर पल फूल।

कविता

अब और नहीं

श्रीमती विजया जैन

बेटी तुम दुर्गा रूप धरो,
इन असुरों का संहार करो,
बस बहुत सहा अब और नहीं,
अब और नहीं, अब और नहीं।

ना ऑख उठा कर देखे कोई,
ना दामन छू पाए कोई,
तुम दमन करो, तुम दमन करो,
बस बहुत सहा अब और नहीं।

चामुंडा बन कर शमन करो,
बन काल रात्रि तुम काल बनो,
अब दमन अब दमन करो,
बस बहुत सहा अब और नहीं।

क्यों गर्भ में मारी जाती तुम,
क्यों राह में फेकी जाती तुम,
इन दुष्टों के तुम प्राण हरो,
बस बहुत सहा अब और नहीं।

पुत्री, पत्नी, जननी हो तुम,
पतिता नहीं पावनी हो तुम,
निज कर्तव्यों का वहन करो,
बस बहुत सहा अब और नहीं।

तुम कन्या हो तुम दीन नहीं,
तुम खुद का अब सम्मान करो,
अत्याचारों का अंत करो,
बस बहुत सहा अब और नहीं।

बेटी तुम दुर्गा रूप धरो,
इन असुरों का संहार करो,
बस बहुत सहा अब और नहीं।

लघुकथा

भाग्य विधाता

आधी रात का वक्त मिला था इसे गर्म होने के लिए' संजीव कार को सड़क के किनारे खड़ा करते हुए बड़बड़ाया।

'क्या हुआ?' बगल की सीट पर बैठे कबीर की ऊँघ में खलल पड़ गया था। 'हमें कुछ देर के लिए गाड़ी बंद करनी है,' संजीव कार से बाहर निकलता हुआ बोला- 'पता नहीं क्या हुआ है, कार बहुत गर्म हो गई है। यहाँ से पीछे तीस किलोमीटर और आगे चालीस किलोमीटर कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ गाड़ी को चेक कराया जा सके। थोड़ी देर में जब इंजिन ठंडा हो जाएगा, धीरे-धीरे फिर चल देंगे।'

संजीव ने एक बार में ही परिस्थिति को समझाने की कोशिश की और झाड़ियों की ओट में हो गया। कबीर भी बाहर निकला और हल्का होने चल दिया। दोनों दोस्त एक शादी में शामिल होने दूसरे शहर जा रहे थे। दिन का काम निपटाकर शाम को निकले थे। रास्ते में खाना खाया और आराम से बारी-बारी गाड़ी चलाकर यहाँ तक पहुँचे थे कि इंजिन गर्म हो गया।

संजीव बहुत समय बाद आधी रात के समय सुनसान जंगली इलाके में खड़ा था। हवा में उसे हल्की ठंडक महसूस हुई। तब तक कबीर भी आ गया था। दोनों मित्र साफ जगह देखकर बैठ गए। संयोग से कोई वाहन भी नहीं निकल रहा था। एक अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ था। 'यार! ये झींगुरों की आवाज है न?' कबीर ने पूछ लिया।

'हो सकती है', संजीव ने गंभीर मुद्रा में सिर हिलाया- 'मुझे बहुत जानकारी नहीं है,' संजीव ने अपनी अज्ञानता को डिफ़ेंड करने की कोशिश नहीं की। दूर कहीं हल्की सी आवाज आई और शांत हो गई। संजीव पीछे की ओर पीठ के बल अधलेटा हो गया। कबीर पूरा पसर गया। दोनों दोस्तों की आँखें आसमान पर टिकी थीं। बहुत अर्से बाद वे रात के समय आकाश को ऐसी जगह से निहार रहे थे जहाँ और कोई रोशनी नहीं थी। साफ-साफ दिखाई दे रहे अंतरिक्ष में कई आकृतियाँ बनाते हुए अनगिनत तारे टिमटिमा रहे थे।

'यार देख, ये सप्तऋषि हैं।' कबीर ने उंगली से इशारा किया।

'हाँ, और दायीं ओर बिच्छू के आकार की वृश्चिक राशि है', संजीव ने भी समझाया- 'ध्यान से देखने पर बिच्छू के आगे के दोनों नुकीले कांटे और पीछे बड़ा सा डंक साफ दिखाई दे रहा है।'

'यह तो सचमुच मजेदार है', कबीर बोला- 'जिन तारों और नक्षत्रों की बातें पढ़ते या सुनते थे, वे आकाश में नजर आ रहे हैं। यहीं कहीं नौ ग्रह भी होंगे। शनि होगा जिसके ढैया और साढ़ेसाती के खौफ में न जाने कितने लोग जिया करते हैं। शुक्र तारा भी होगा जिसके अस्त होने पर कई लोग शादी नहीं करते।'

'पंडित जी कितनी बातें करते हैं इन ग्रह-नक्षत्रों की,' संजीव मुस्कुराया- 'जन्मकुंडली और पूजापाठ के जरिए कितने लोगों का पेट पलता है !'

'ज्योतिषियों की मानें तो यही आसमानी सितारे हमारा मुकद्दर बनाते हैं', कबीर कुछ सोचते हुए बोला- 'सुना है, आसमान में चमक रहे जिन तारों की परावर्तित रोशनी हमारी आँखों में पड़ती है वे हमारी धरती और उसमें रहनेवाले प्राणियों को किस्मत तय करने की हद तक प्रभावित करते हैं।'

'मैं नहीं मानता', संजीव बोला- 'यदि ऐसा होता भी हो तो तकदीर के मैदान में हम कमजोर बिलकुल नहीं हैं।'

'कैसे?' कबीर को बात समझ में नहीं आई।

'जैसे हमें यह तारे नजर आते हैं, उन सितारों से हमारी पृथ्वी भी दिखाई देती होगी।' संजीव उठकर बैठता हुआ बोला।

'क्यों नहीं?' कबीर ने मित्र का समर्थन किया।

'तो, जैसे वे हमें करते हैं, हम भी उन्हें प्रभावित करते होंगे', संजीव चहका- 'अर्थात् कमजोर बिलकुल नहीं, हम उनके भाग्य विधाता हैं।'

दोनों मित्रों के चेहरे पर उभरी चमक देखने लायक थी। उन्होंने मुट्ठी बांधकर हवा में उछाली और नए जोश के साथ उठकर खड़े हो गए। कार भी चलने लायक ठंडी हो गई थी।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शुद्ध विचारों से उपजी कला ही शुद्ध होती है

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कला बिखरी पड़ी है हमारे आसपास। बस हमें आपको अपनी नजरों को सावधानी पूर्वक खोलकर रखना होगा, सूक्ष्मतम् दृष्टि से उसके कण-कण को पहचानने का प्रयास करना होगा। प्रकृति प्रदत्त तोहफे के महत्व को समझना होगा। पहचानना होगा खुद को एवं खुद के लिए अपने आसपास व्याप्त परिवेश को। सम्हालना होगा इन्हें भविष्य के लिए, जैसे सम्हाला है कलाकार विनय शर्मा ने। अतीत राग जहां बसता है कलाकार विनय शर्मा का दिल, जहां कोई भी जाए मन रम ही जाएगा। जहां बसी है अतीत से जूड़ी तमाम यादें, अनमोल धरोहरें। जहां एक-एक वस्तुओं से घंटों बतियाया जा सकता है। जहां पहुंचने का सौभाग्य मुझे भी मिल गया था। कलाकार विनय शर्मा का दिल भी उनके संग्रहालय 'अतीत राग' जैसा ही विशाल है। उनसे मुलाकात के बाद संवाद का अंत नहीं, है तो समय की कमी, पर जितना भी समय मिल सका जानने का पूरा प्रयास रहा।

अरावली की तलहटी में बसा लालसोट गाँव, जहाँ जन्म हुआ कलाकार विनय शर्मा का। बचपन से ही संवेदनशील, इतिहास एवं कला के बारीकियों को बहुत ही बारीकी से महसूसने की ललक आपकी विशेषता में शामिल रही है। जंगल, पहाड़, रेत के टीले, पानी या झरनों में बसते थे आपके प्राण। कलाकार विनय शर्मा जो कई-कई किलोमीटर पैदल चलते हुए, बहुत सारे मनोहारी दृश्यों को आत्मसात करते हुए रास्ते में छोटे-छोटे पत्थरों के पोत तथा उसके भूरे रंगों के तान को घंटों निहारा करते थे, उसमें पड़ी बारीक बहुत ही बारीक रेखाओं के प्रकृति को समझने हेतु उसके बारीकियों को समझने का प्रयास करते थे। इन तमाम स्वतंत्र प्रफुल्लित यात्राओं के बाद कहीं जाकर अपने ननिहाल पहुँच पाते थे, वो भी पैदल। रास्ते की तमाम यादें, बचपन की यादें या कहें तब की तमाम आकृतियां आज भी उनके कृतियों में जिंदा हैं। अरावली तथा वहां की पूरी जीवंतता उनके कृतियों में हमेशा जीवित है।

नाना ज्योतिषी थे, जन्मपत्रियाँ बनाया करते थे, चटख एवं प्राकृतिक रंगों का प्रयोग उनकी विशेषता थी। रंग बनाने की प्रक्रिया तथा बने हुए रंगों को भी गौर से देखना विनय शर्मा के आदतों में शुमार हो गया था। रंगों के गुण, अनुभव तथा विशेषताओं से वे बचपन में ही परिचित हो गये थे। पढ़ने के लिए पटरियां खुद बनानी पड़ती थी, काला करने के बाद ही खड़िया से लिखने का काम होता था। अक्षरों से पहले रेखाओं का बनना लगभग सभी के साथ होता है। इनके साथ भी हुआ। समय के साथ लोग अक्षरों पर अटक जातें हैं और रेखाओं को हल्का मानकर भुला देते हैं जबकि कलाकार विनय के साथ ऐसा नहीं हुआ, आप रेखाओं के ही होकर रह गए। कला के बरअक्स आप शुरुआत से ही सोचने लगे थे। स्कूल जहां से आपकी शिक्षा हुई वहां लगभग एक सौ पचास वर्ष पुराने भित्तिचित्र बने हुए थे। चित्रों को देख देखकर बड़ा होना भी आपके भीतर के चित्रकार को जगाने में मददगार साबित हुआ। तब क्या बल्कि हमेशा से ही ऐसा रहा है कि हर मां बाप अपने बच्चों को डॉक्टर या इंजीनियर ही बनाना चाहते हैं, यहां भी वही हुआ, दबाव में आप इंजीनियर बनने के राह पर बढ़े भी पर आपको कलाकार ही बनना था। विनय जी कहते हैं कि 'अगर आपका रेखा पर कंट्रोल है, भाषा कोई भी हो आप उसे जल्दी से पकड़ लेंगे। एक कलाकार की खासियत होती है कि वह किसी भी भाषा को बहुत जल्दी ऑब्जर्व कर लेता है क्योंकि वह रेखाओं को आब्जर्व करना जानता है। यही मेरे साथ हुआ मैंने अंग्रेजी को बहुत जल्दी पकड़ लिया।'

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट में अध्ययन के दौरान विषय, माध्यम को लेकर बड़ी भटकाव वाली स्थिति हो गई थी। कोई हेमा मालिनी को बना रहा था, कोई धर्मेंद्र को, कोई मिनिएचर का कार्य कर रहा था। वहां मिनिएचर का ज्यादा बोलबाला था। उस समय वहां पर अमूर्तन को लेकर कुछ विशेष नहीं हो पा रहा था। विनय शर्मा अमूर्तन की तरफ झुक गए, आप अपने तरीके से काम करते रहे जबकि लोगों के कार्य को देखकर मन में घबराहट सी होती थी पर वार्षिक रिजल्ट आने के बाद सारी घबराहटें जाती रहीं। आप को लगा कि 'कला वही होती है जो आपके मन में घट रही होती है जिसको आप प्रत्यक्ष रूप से दिखा सकते हैं, जिसको आप अपने तरीके से प्रकट कर सकते हैं'। निरंतर उसी तरफ आपका बढ़ना आपके लिए विशेष हो गया। एप्रिशिएशन लगातार मिलता रहा, नए-नए क्रिएशन भी लगातार होते रहे। बाहर से आने वाले कलाकारों का सानिध्य भी लाभप्रद हुआ। लोग डिमॉस्ट्रेशन देने आते थे आप उनसे उत्साह से अधिक सीख लेने के प्रयास में रहते थे। आप कहते भी हैं किसी भी कलाकार के व्यक्तित्व को सीख जाने से उनकी कला आप ही सीख जाएंगे, कलाकृति से ज्यादा आप कलाकार के व्यक्तित्व पर ध्यान देते रहे। इंग्लैंड जाने का अवसर भी ऐसे ही निरंतर प्रयास की देन है,।

कला समर्पण मांगती है, कलाकार खुद को जितना समर्पित कर सकता है कला उतनी उसकी अपनी होती है। कलाकार विनय शर्मा कहते हैं कि

'जब तक आप सच्चे मन से कला के साथ नहीं जुड़ पाते हैं, कलाकृतियां नहीं बना सकते, तब तक आप विफल होते हैं। जब तक आप कला को सम्मान नहीं देते हैं तब तक आप विफल होते हैं। जब तक आपके मन में शुद्धता नहीं होगी आप शुद्ध कला की कल्पना भी नहीं कर सकते, यदि आपका दिल शुद्ध होगा तो शुद्ध कला निकलेगी। उसी कला को मान्यता मिलेगी। हमारे यहां दुर्भाग्य की बात यह है कि लोग कला को ओढ़ तो लेते हैं पर उसकी पूजा नहीं कर पाते, उस को सम्मान नहीं दे पाते और फिर विफलता का रोना रोने लग जाते हैं। अपना सारा दोष हम कला के ऊपर मढ़ देते हैं। ये नहीं होना चाहिए। शुद्ध विचारों से उपज़ी कला ही शुद्ध होती है। सुविचारों से ही सुकृति निकलती है यह हमेशा ध्यान देने योग्य बात है'।

कलाकार विनय शर्मा जो कला से ज्यादा कलाकार के व्यक्तित्व को सीखने का प्रयास करते थे, कला के प्रति खुद को समर्पित भी कर दिया करते थे। परिणाम ये रहा कि आपको कला की वो सारी बातें पता चल सकीं जो सीखने से कभी नहीं आती। वरिष्ठ कलाकारों के साथ ने भी बहुत कुछ सीखने में सहायता की। विजय सिंह, सूजा, जतिन दास, जय झरोटिया, अनुपम सूद, ज्योति भट्ट जैसे वरिष्ठ कलाकार जो डिमॉन्स्ट्रेशन हेतु राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट के कैम्पस में बीच-बीच में आया करते थे, जिनके साथ बीस-बीस दिन रहने का मौका मिलता था, के सानिध्य ने कलाकार विनय शर्मा को बहुत प्रभावित किया। ख्वाब जो फड़फड़ा रहे थे को मजबूत पंख मिला बड़ौदा आर्ट कॉलेज में जहां स्वतंत्र अभिव्यक्ति की पूरी आजादी थी। वैचारिक बंधनों से परे खुले आसमान का साथ पाकर सृजन और खिल उठा। यहां प्रिंट मेकिंग सीखते हुए ही एक वर्ष के लिए इंग्लैंड के जॉन मूर्स विश्वविद्यालय जाने का मौका मिल गया जहां अथाह की गुंजाइश थी। बड़ौदा से भी कई गुना आजादी आपको इंग्लैंड में मिली जहां मनमर्जियां खूब चला सकते थे। तकनीकी रूप से भी मजबूती मिली। उस एक साल के एक भी पल को जाया करना आपको नागवार गुजर रहा था। वहां के निदेशक माइक नोल्स थे जो सिर्फ दो मिनट देर होने के कारण पहले ही दिन के क्लास में बैठने की अनुमति नहीं दिए। समय का कद्र करना आप ने वहीं से सीखा। समय के प्रति सख्त माइक नोल्स दिल के बड़े अच्छे थे। पहले दिन क्लास में न बैठ पाने का असर ये हुआ कि आप रात-दिन लगातार मेहनत करने लगे, माइक नोल्स साहब ने आपको मेहनत करते देखा। उन्होंने आप के लिए अधिक समय तक कैम्पस खोलने का निर्णय ले लिया, जो बहुत ही कम देखने को मिलता है। फायदा ये हुआ कि लगातार मेहनत से सिल्कस्क्रीन सेरेग्राफी पर बोनसाई की एक पूरी श्रृंखला तैयार हो सकी। वापसी में इन सभी कृतियों को वन मैन सो के अंतर्गत वहां प्रदर्शित भी किया गया। काफी कृतियां बिक गईं।

कलाकार को रम जाना होता है, भूल जाना होता है दुनिया को क्योंकि वो अपने दुनिया में यात्रा कर रहा होता है जहां के यात्रा का सौभाग्य सिर्फ उसे ही मिला हुआ है। दूसरा लाख प्रयास के बावजूद भी उसका अनुभव नहीं कर सकते। कलाकार को चाहिए कि वो अपने विशेष दृष्टि से, जो उसको विशेष रूप से प्राप्त हुई है, समाज से कुछ विशेष लाकर उसी समाज को सौंपता रहे जो समाज के विसंगतियों पर प्रहार करता रहे। कलाकार विनय शर्मा भी कुछ ऐसा ही कर रहे हैं।

बड़ौदा आते ही परीक्षा, परीक्षा के पांच दिनों बाद जहांगीर गैलरी में प्रदर्शनी, प्रदर्शनी में मकबूल फिदा हुसैन का आगमन और विनय शर्मा के कृतियों को देखकर कहना कि 'बेटा बहुत आगे जाओगे'। ये तमाम घटनाएं थी जो निरंतर कार्य करने को प्रेरित कर रही थी फलतः एक से बढ़कर एक कृतियों का सृजन हो रहा था।

चित्र संयोजन, वस्तुओं को सलीके से गहराई के साथ, आम नजरिए से अलग हटकर देखने का हुनर आपने राजस्थान में गुरू विद्यासागर उपाध्याय जी से ही सीख लिया था। उनका कहना था कि 'सबसे पहले अपने दृष्टि को इतना परिपक्व करो, ऑब्जेक्ट को इतने गौर से देखो कि वो अंतर्मन के अनंत गहराइयों तक समा जाय तथा भाव के रूप में कृतियों में प्रकट हो। ऐसे कार्य स्थाइत्व लिए होते हैं, लोगबाग याद रखते हैं अन्यथा को भूल जाते हैं'। बड़ौदा के हवा में ही कुछ विशेष था। मौलिकता को लेकर रिनी धुमाल जी से काफी कुछ सीखने को मिला। बड़ौदा में काफी खुलापन था। कभी भी किसी भी शिक्षक से बात करने की पूरी आजादी थी। विनय शर्मा जी कहते हैं कि 'मुझे बड़ा अच्छा सौभाग्य मिला कि ज्योति भाई, जयराम पटेल जी, गुलाम शेख जी, राघव कनेरिया जी, बी.एच. पटेल जी के साथ मैं काम कर सका।'

आगे चलकर पेपर मैन की उपाधि भी आपको मिली।

प्रतीक सोनवलकर - ईमानदार अधिकारी और संवेदनशील कवि

साहित्यिक और संगीत के संस्कार आपको परिवार से मिले। प्रतीक जी के पिताश्री श्री दिनकर सोनवलकर जी दर्शन शास्त्र के विख्यात प्राध्यापक और जाने माने साहित्यकार रहे हैं। दिनकर जी बहुत अच्छे गायक और आचार्य रजनीश के सहपाठी रहे हैं। महाकवि बच्चन , भावनीप्रसाद मिश्र जैसे नामधारी कवियों से उनका सत्संग रहा। जावरा में पढ़ाई के दौरान दिनकर जी मेरे होस्टल के वार्डन रहे और उनसे जीवंत संपर्क वर्ष 1980 में रहा। दिनकर जी की शख्सियत महान रही और तब जावरा का शासकीय महाविद्यालय प्राध्यापकों की योग्यता और विद्वत्ता के कारण जाना जाता था। अपनी कविता के जरिये व्यंग्य करने वालों कवियों में दिनकर जी अग्रणी थे। दिल्ली की पत्रिका 'व्यंग्य यात्रा' ने कबीरी धारा के व्यंग्य कवियों में दिनकर जी की रचनाओं का हाल ही में प्रकाशन किया। साहित्यकार अपनी रचनाओं से ही विख्यात होते हैं और दिनकर जी ऐसे ही महान कवि और व्यंग्यकार रहे।

स्मृति शेष

डॉ. हरीश कुमार सिंह

प्रख्यात साहित्यकार और संयुक्त आयुक्त प्रतीक सोनवलकर का मात्र छप्पन वर्ष की आयु में देवलोकगमन साहित्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। 24 दिसम्बर 1968 को रतलाम में जन्मे , प्रतीक जी के देहांत का समाचार जैसे ही 29 अगस्त 2024 को मिला,सहसा किसी को विश्वास नहीं हुआ और सब एक दूसरे से दिल को झकझोर देने वाले इस दारुण समाचार की पुष्टि करते रहे। आपको मध्यप्रदेश साहित्य परिषद का वर्ष 2018 का प्रादेशिक श्रीकृष्ण सरल सम्मान, कविता के लिए प्राप्त हुआ था। वर्ष 2011 में साहित्य के लिए अखिल भारतीय टेपा सम्मान, मालवा रंगमंच सम्मान सहित अनेकों सम्मान और पुरस्कार आपको प्राप्त हुए। आप एक श्रेष्ठ गायक और संगीतज्ञ भी रहे और आकाशवाणी,दूरदर्शन सहित देश के विभिन्न मंचों से आपने प्रस्तुतियां भी दीं। प्रख्यात संगीतकार खय्याम, अन्नू मलिक, उषा खन्ना,अमिताभ बच्चन से आप परिचित रहे। प्रतीक जी ने कई गजलकारों और कवियों की रचनाओं को अपना स्वर दिया।

साहित्यिक और संगीत के संस्कार आपको परिवार से मिले। प्रतीक जी के पिताश्री श्री दिनकर सोनवलकर जी दर्शन शास्त्र के विख्यात प्राध्यापक और जाने माने साहित्यकार रहे हैं। दिनकर जी बहुत अच्छे गायक और आचार्य रजनीश के सहपाठी रहे हैं। महाकवि बच्चन, भावनीप्रसाद मिश्र जैसे नामधारी कवियों से उनका सत्संग रहा। जावरा में पढाई के दौरान दिनकर जी मेरे होस्टल के वार्डन रहे और उनसे जीवंत संपर्क वर्ष 1980 में रहा। दिनकर जी की शख्सियत महान रही और तब जावरा का शासकीय महाविद्यालय प्राध्यापकों की योग्यता और विद्वत्ता के कारण जाना जाता था। अपनी कविता के जरिये व्यंग्य करने वालों कवियों में दिनकर जी अग्रणी थे। दिल्ली की पत्रिका 'व्यंग्य यात्रा' ने कबीरी धारा के व्यंग्य कवियों में दिनकर जी की रचनाओं का हाल ही में प्रकाशन किया। साहित्यकार अपनी रचनाओं से ही विख्यात होते हैं और दिनकर जी ऐसे ही महान कवि और व्यंग्यकार रहे।

जाहिर है प्रतीक जी को साहित्य विरासत में मिला और उनके परिवार में माताश्री मीरा दिनकर सोनवलकर भी साहित्य अनुरागी हैं और उनकी एक पुस्तक 'बिन सत्संग विवेक न होई' प्रकाशित हुई है। प्रतीक जी की धर्मपत्नी डॉ. पंकजा सोनवलकर की काव्य प्रतिभा को उनके ससुर दिनकर जी ने प्रोत्साहित किया और आपके कविता संग्रह 'भावनाओं के शब्दांश', पांखुरी आदि प्रकाशित हैं। प्रतीक जी की पुत्री दीक्षा देश -विदेश में कथक नृत्य की प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। प्रतीक जी के सुपुत्र सार्थक सहित पूरा परिवार साहित्य-संस्कृति के लिए समर्पित है।

प्रतीक जी की प्रकाशित कृतियों में रिश्तों के चक्रव्यूह , समर्पण आदि सम्मिलित हैं। आपने अपने पिताश्री की रचनाओं का प्रकाशन फिर से करवाया जो 'प्रतिनिधि रचनाएं-दिनकर सोनवलकर' के नाम से लोकप्रिय हुआ। दिनकर जी की स्मृतियों को जीवंत रखने और साहित्यिक,सांस्कृतिक ,सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियों के सञ्चालन के लिए 'दिनकर सृजन संस्थान' की स्थापना आपने की और डॉ. पंकजा सोनवलकर इसकी अध्यक्ष बनीं। दिनकर सृजन संस्थान के तत्वाधान में आपने कई आयोजन किये और दिनकर सम्मान से कई साहित्यकारों को सम्मानित किया। दिनकर सृजन संस्थान के ये आयोजन उज्जैन सहित बडनगर, जावरा, देवास आदि स्थानों पर आपने आयोजित किये। पिछला आयोजन मध्यप्रदेश साहित्य परिषद के सहयोग से जावरा में साहित्य अकादेमी के निदेशक विकास दवे की उपस्थिति में भव्य रूप से आयोजित किया गया था।

प्रतीक सोनवलकर ईमानदार उच्च अधिकारी भी रहे। संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी प्रतीक सोनवलकर जी ने कभी अपने पद का अभिमान नहीं किया और उनसे मिलने पर, एक अलग ही आनंद की अनुभूति होती थी। प्रतीक जी की यादें और उनका व्यवहार सदैव याद रहेगा।

हॉरर-कामेडी ज़ोनर की मुँज्या, दर्शकों को बाँधेगी

कहानी का कथातत्व महाराष्ट्र में प्रचलित 'मुंज्या' की एक दन्तकथा पर आधारित है। मुंज्या उस भूत को कहा जाता है जिसके मुण्डन के दस दिनों के भीतर उसकी मौत हो जाती है और वो अपनी अतृप्त इच्छाओं के कारण भूत बन जाता है। कहानी की शुरुआत होती है वर्ष 1952 कोंकण के चैतुकवाड़ी नामक गाँव से, जहां मुंज्या नामक दस साल का लड़का अपने से बड़ी उम्र की लड़की मुन्नी के प्यार में पागल है। वह मुन्नी को अपना बनाने के लिए अपनी बहन की नरबलि देकर काला जादू करने की हद तक चला जाता है, मगर वहाँ कुछ ऐसी अनहोनी होती है कि मुँज्या की मौत हो जाती है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

बॉलीवुड में डरावनी फिल्मों का अपना एक समर्पित दर्शक वर्ग (लॉयल ऑडियंस) हमेशा से रहा है, मगर बीते कुछ साल में हॉरर-कॉमिडी का एक नया जॉनर सामने आया है, जिसने हिन्दी सिनेमा प्रेमियों को खूब आकर्षित किया। उसी ऑडियंस को ध्यान में रखकर फिल्म निर्माता - 'स्त्री', 'भेड़िया', 'रूही' जैसी हॉरर-कॉमिडी के साथ नमूदार हुए हैं । निर्देशक आदित्य सरपोतदार की 'मुंज्या' भी इसी सिलसिले को आगे बढ़ाती है। फिल्म में सीजीआई (कंप्यूटर से बनाए गए ग्राफिक्स) से बनाया गया एक संपूर्ण किरदार नया प्रयोग है। हॉरर और कॉमिडी भी खूब है, बस कहानी पर थोड़ी-सी और मेहनत होनी चाहिए थी जो नहीं हुई और फिल्म थोड़ी कमज़ोर रह गई ।

कहानी का कथातत्व महाराष्ट्र में प्रचलित 'मुंज्या' की एक दन्तकथा पर आधारित है। मुंज्या उस भूत को कहा जाता है जिसके मुण्डन के दस दिनों के भीतर उसकी मौत हो जाती है और वो अपनी अतृप्त इच्छाओं के कारण भूत बन जाता है। कहानी की शुरुआत होती है वर्ष 1952 कोंकण के चैतुकवाड़ी नामक गाँव से, जहां मुंज्या नामक दस साल का लड़का अपने से बड़ी उम्र की लड़की मुन्नी के प्यार में पागल है। वह मुन्नी को अपना बनाने के लिए अपनी बहन की नरबलि देकर काला जादू करने की हद तक चला जाता है, मगर वहाँ कुछ ऐसी अनहोनी होती है कि मुँज्या की मौत हो जाती है।

अपशगुन को टालने के लिए परिवार और गाँव वाले काफी यत्न करते है मगर मुंज्या की बेचैन आत्मा एक खतरनाक भूत का रूप धारण कर लेती है। सालों बाद यानी वर्तमान में मुंज्या के वंशज बिट्टू (अभय वर्मा) अपनी माँ (मोना सिंह) और दादी (सुहास जोशी) के साथ अपने गाव जाता है, तो मुंज्या का भूत उस पर सवार हो जाता है। वह बिट्टू को डराकर, प्रताड़ित करके अपनी मुन्नी की तलाश करवाना चाहता है, ताकि वह मुन्नी से अपनी शादी की अधूरी ख्वाहिश को पूरा कर सके, मगर तभी उसकी नजर बिट्टू की प्रेमिका बेला (शरवरी वाघ) पर पड़ती है और वह बेला पर आसक्त हो जाता है। अब मुंज्या को बेला की बलि चढ़ाकर उसे अपना बनाना है और शादी करनी है। फिल्म का अन्त बड़ा रोचक है ।

फिल्म की मुख्य भूमिका में बिट्टू के रुप में अभय वर्मा ने अच्छा काम किया है। पूरी फिल्म में उन्होंने मासूमियत के साथ अपने चरित्र को निभाया है। उनके चेहरे के भाव काफी प्रभावित करते हैं । अभय की पारिवारिक मित्र बेला की भूमिका में शरवरी ने भी अच्छा काम किया है। बिट्टू की माँ की भूमिका में मोना सिंह का चरित्र चित्रण भी काफी प्रभावशाली है। बीच-बीच में उनकी कॉमिक टाइमिंग आपको हँसने पर मजबूर करेगी। जिस बच्चे ने मुंज्या का रोल निभाया है, उसका भी जिक्र करना जरूरी है। आदित्य सरपोतदार का निर्देशन दर्शकों को अन्त तक बांधे रखने में कामयाब रहता है । फिल्म के कुछ दृष्य यदि आपको डराने में कामयाब रहते हैं तो इसका श्रेय फिल्म में विजुअल इफेक्ट्स, साउण्ड इफेक्ट्स और सिनेमैटोग्राफी की तकनीकी टीम को दिया जाना चाहिए । इस फिल्म का असली तेवर क्या है इसको लेकर भ्रम की स्थिति भी बनती है । कहीं फिल्म डराती है, तो कहीं हँसाती है।जिस गँभीरता के साथ फिल्म की शुरुआत होती है, ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि आगे कॉमेडी भी देखने को मिलेगी। लगता है कि कहानी के मिज़ाज को एकसार बनाये रखना था।

देवास के पत्रकारगण सदैव मेरे दिल में रहेंगे : आनंद मोहन

प्रेस क्लब देवास द्वारा कार्यक्रम आयोजित कर सेवानिवृत्त हुए श्री गुप्ता व श्री जीवनानी को दी गयी विदाई

देवास। मुझे 40 वर्षों से अधिक की शासकीय सेवा में जो प्रेम व सम्मान मुझे देवास के पत्रकारों से मिला वो सदैव मेरे दिल मे रहेगा। मैं भले ही सेवानिवृत्त होकर जा रहा हूं, लेकिन आप सभी पत्रकारों से सम्पर्क में रहूंगा, आप जब भी चाहे मुझ से चर्चा कर सकते है। उक्त बातें प्रेस क्लब देवास द्वारा वरिष्ठ नागरिक संस्था सभाकक्ष में आयोजित कार्यक्रम में सेवानिवृत्त हुए जिला जनसम्पर्क अधिकारी आनंद मोहन गुप्ता ने कही। श्री गुप्ता का प्रेस क्लब पदाधिकारियों व सदस्यों द्वारा शाल, श्रीफल व प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ, वर्किंग जर्नलिस्ट्स यूनियन, आंचलिक पत्रकार संघ, जनसम्पर्क विभाग के कर्मचारियों सहित उपस्थित पत्रकारों द्वारा श्री गुप्ता का पुष्प माला पहनाकर स्वागत व सम्मान किया गया। इसके साथ ही पत्रकारों द्वारा अपने शब्दों से भी श्री गुप्ता के कार्यकाल

की उपलब्धियों को गिनाया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रेस क्लब अध्यक्ष अतुल बागलीकर ने की।साथ ही जिला जनसंपर्क कार्यालय में पदस्थ वाहन चालक हेमराज जीवनानी की सेवानिवृत्ति पर उनका भी शाल श्रीफल और पुष्प माला पहनाकर स्वागत किया गया। विदाई कार्यक्रम में देवास, खातेगांव व बागली के पत्रकारगण उपस्थित थे। संचालन प्रेस क्लब उपाध्यक्ष शेखर कौशल ने किया। आभार सहसचिव शैलेन्द्र अडावदिया एवं कोषाध्यक्ष सिद्धार्थ मोदी ने माना। उक्त जानकारी प्रेस क्लब सचिव चेतन राठौड़ ने दी।

अध्यक्ष सदस्यों की नहीं सुनती, अध्यक्ष की कर्मचारी अधिकारी नहीं सुनते..!

नर्मदापुरम। खरीद फरोख्त से बन पाई विपक्ष विहीन पिंक परिषद की हालत प्रभारी मंत्री को बेहतर नहीं बताई गई। यहां परिषद के सदस्यों की अध्यक्ष नहीं सुनती न अध्यक्ष की मुख्य नगरपालिका अधिकारी, निरंकुश नगरपालिका संभालते हुए मानों अधिकारी खुद निरंकुश हो गई उन्होंने प्रभारी मंत्री का फोन नहीं उठाया कलेक्टर के फोन पर जिन्होंने प्रभारी मंत्री से बात की, महिला अधिकारी होने का लाभ उन्हें मिला प्रभारी मंत्री ने परिषद के सदस्यों से अच्छा व्यवहार करने की उन्हें समझाइश दी। दो साल में पिंक परिषद की हालत इतनी खराब क्यों.. प्रदेश संगठन महामंत्री ने भोपाल बुलाकर विधायकों को फटकारा जिलाध्यक्ष की खबर ली सांसद को भी नहीं बक्शा.. बगावत कंट्रोल कैसे नहीं हो पा रही तब दूसरे दिन 21 असंतुष्ट पार्षदों ने एक साथ पलटी लगाई और भोपाल पहुंचे हैं। नगरपालिका में विपक्ष नहीं होने का लाभ चार पार्षद उसमें पूर्व भी शामिल हैं विधायक प्रतिनिधि के साथ नपा को खोखला कर रहे। वार्ड नं 19 की पार्षद श्रीमती मीना वर्मा जो नपाध्यक्ष रह चुकी नगरपालिका की कार्यप्रणाली से अचंभित हैं वो बताती है नपाध्यक्ष की सफाई इंस्पेक्टर तक नहीं सुनता उनके वार्ड में सफाई नहीं होने के कारण उन्होंने सफाई इंस्पेक्टर को फोन किए कार्यालय जाकर नपाध्यक्ष से बात की उन्हें कहना पड़ा मैडम मैं भी नपाध्यक्ष रह चुकी पर ऐसा माहौल बनने नहीं दिया कि अध्यक्ष की बात कर्मचारी नहीं सुने वार्ड में विधुत व्यवस्था नहीं खंबों पर लाईट नहीं है बरसात में कीड़े कांटों का डर रहवासियों को रहता है। कीचड़ पानी से आवागमन की परेशानी हो रही वार्ड में आकर यह नपाध्यक्ष देख चुकी, ठेकेदार को कहा गया वार्ड में मुरम बजरी डाले विधुत शाखा को विधुत सामग्री लगाने के निर्देश दिये पर काम भी नहीं हो पाए, ठेकेदार से पूछा उसने जबाब दिया मैडम जितना आर्डर था सप्लाई कर दी अब अगले आदेश में पूर्ति होगी, दुखी पार्षद को वार्ड वासियों से बुरा सुनना पड़ रहा ऐसी समस्या दूसरे वार्ड में भी है, गिनती के कांग्रेसी पार्षदों ने तो घबराकर भाजपा ज्वाइन कर ली कम-से-कम वार्ड के लोगों की फटकार तो सुनना नहीं पड़ेगी। लेकिन वे भी भाजपा ज्वाइन कर पछता रहे। 5 विरोधी कांग्रेसी पार्षद भी एक नही रह पाए उसका नतीजा सामने है। लेकिन केबिनेट के फैसले से पानी फिर गया। प्रभारी मंत्री से मिलकर आने के बाद अब असंतुष्ट पार्षद विपक्ष की भूमिका निभाने को लेकर मन बना रहे नाम नहीं छापने की शर्त पर दरबारी पार्षद पहले तो नपाध्यक्ष के विरोध में बुरा बुरा बोलते फिर इस्तीफा देने की बात कहते हैं फिर इस्तीफा देना समस्या का हल नहीं कहकर, सभी विरोधी पाषर्द नगर की समस्याओं को लेकर कलेक्टर से मुलाकात कर हल करने का प्रयास करने की बात कह रहे। नगर हित में 21 पार्षदों का एक होना निश्चित ही बेहतर प्रयास है समस्याओं के निदान हेतु ठीक भी लेकिन यह संभव कैसे हो सकेगा इस पर भरोसा कर पाना मुश्किल है क्योंकि गिनती के 21 पार्षदों में कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा की कहावत पार्षदों में दिखाई देती है।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने मां के नाम किया पौधारोपण

देवास। राष्ट्रीय पोषण माह के अंतर्गत शनिवार को देवास महिला बाल विकास विभाग आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने माता टेकरी पर बड़ी संख्या में एकत्रित होकर 'माँ के नाम' पौधारोपण किया।

कार्यक्रम मे महापौर श्रीमती गीता अग्रवाल, जिला अधिकारी महिला बाल विकास श्रीमती रेलम बघेल, सीडीपीओ मोहनलाल अहिरवार,श्रीमती समीक्षा जैन एवं समस्त पर्यवेक्षक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अन्य हितग्राही भी उपस्थित थे।

प्रेस्टीज प्रबंध एवं शोध संस्थान ने मिट्टी के गणेश बनाने की कार्यशाला आयोजित की

देवास। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रेस्टीज प्रबंध एवं शोध संस्था में मिट्टी के गणेश कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें में गणेश चतुर्थी के त्योहार के लिए मिट्टी के गणेश की मूर्तियाँ बनाना सिखाया गया । इस कार्यशाला ने मिट्टी से निर्मित श्री गणेश की पारंपरिक मूर्तियां बनाने की प्रथा को बढ़ावा देने और विद्यार्थियों को अपने हाथों से श्री गणेश की मूर्तियाँ बनाने का अवसर उपलब्ध

कराया। कार्यशाला में शुभम प्रजापति के द्वारा मिट्टी के गणेश बनाने की तकनीक और विभिन्न डिजाइन सिखाई गयी, जिससे विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया और अपने घरों में पूजा करने के लिए गणेश की मूर्तियाँ तैयार की। इस कार्यशाला का उद्देश्य पर्यावरण अनुकूलता को बढ़ावा देना एवं प्लास्टर ऑफ पेरिस और अन्य हानिकारक सामग्री के उपयोग से बचने के लिए प्रोत्साहित करना था। इस उपलक्ष मे निदेशक प्रोफेसर डॉ. राजेन्द्र जैन ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संयोजन एवं संरक्षण के गुण सिखाए। कार्यशाला में डिप्टी निदेशक डॉ. आशिमा जोशी की विशेष उपस्थित रही। लगभग 120 विद्यार्थियों इस कार्यशाला का लाभ लिया। यह जानकारी कार्यशाला की सुत्रधार डॉ. अंजली सींगी ने दी।

जयकिशोर मिश्रा बने भाजपा सहकारिता प्रकोष्ठ के सदस्यता अभियान बैतूल जिला प्रभारी

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा और प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा की सहमति से प्रदेश संयोजक मदनलाल राठौर द्वारा सहकारिता प्रकोष्ठ के सदस्यता अभियान के लिए जिला प्रभारी एवं सहप्रभारियों की नियुक्ति की गई है। इस कड़ी में जयकिशोर मिश्रा को बैतूल जिले का प्रभारी नियुक्त किया गया है।

जयकिशोर मिश्रा ने अपनी नियुक्ति पर भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेतृत्व का आभार व्यक्त किया और कहा, यह जिम्मेदारी मेरे लिए गर्व की बात है। मैं अपने जिले व प्रदेश नेतृत्व का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मुझ पर विश्वास जताया है। मैं इस जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाऊंगा और बैतूल जिले में पार्टी के सदस्यता अभियान को सफल बनाने के लिए हरसंभव प्रयास करूंगा। नवनियुक्त जिला प्रभारी जयकिशोर मिश्रा को इस उपलब्धि पर उनके मित्रों, शुभचिंतकों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने बधाई दी। मिश्रा ने सभी को इस अवसर पर धन्यवाद देते हुए कहा कि वे अपने जिले में संगठन को और मजबूत करने के लिए अथक प्रयास करेंगे।

इस नियुक्ति से बैतूल जिले में सहकारिता प्रकोष्ठ के सदस्यता अभियान को नई दिशा मिलेगी और संगठन के विस्तार में अहम योगदान रहेगा।

पर्यूषण पर्व का हुआ दिव्य शंखनाद

आठ दिनों तक चलेगा त्याग, भक्ति,उपासना एवं सत्संग का भव्य आयोजन

देवास। पर्वाधिराज श्री पर्युषण महापर्व का आज भारत भर में मंगलमय शुभारंभ हुआ है। इसी के साथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर तुकोगंज रोड पर पर्युषण के शुभारंभ अवसर पर साध्वीजी शुभवर्धना श्रीजी , जयवर्धना श्रीजी ने कहा कि पर्युषण के अंतर्गत पुण्य का पोषण एवं पाप का शोषण होता है। इस पर्व के अंतर्गत पांच कर्तव्यो का निर्वाहन किया जाता है ये कर्तव्य है- अहिंसा पालन, साधर्मिक भक्ति, क्षमापना, अठ्ठमतप, चौत्य परिपाटी। अहिंसा इस पर्व का प्राण तत्व है। जैन जगत के इतिहास में इस अहिंसा का पालन करके असंख्य जीवात्मा मोक्षगामी बनी है। साधर्मिक याने सहधर्मी की भक्ति करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। यदि हम सक्षम है तो हमारे सहधर्मी की कठिनाईयों को अवश्य दूर करना चाहिए। क्षमापना हमारे मित्रो एवं शत्रुओं सभी से करना होगी तब ही पर्व की सार्थकता बनेगी। अठ्म तप के अंतर्गत पर्यूषण के दौरान तीन उपवास किए जाते हैं और चौत्य परिपाटी करके सभी जिन मंदिरों के दर्शन एवं स्पर्शना की जाती है। आपने कहा कि जिस प्रकार हजारो किमी लम्बी रेल की पटरी में से यदि कुछ सेन्टीमीटर पटरी हटा दी जावे तो भयावह दुर्घटना हो सकती है, उसी प्रकार इन पांचो कर्तव्यो में से एक का भी पालन नहीं करेंगे तो यह पर्व हमारे लिए लाभदायक नहीं बन सकेगा।

आपने आगे कहा कि जैन जगत में चार अधिराज है-पर्वाधिराज, ग्रंथाधिराज, तीर्थाधिराज, मंत्राधिराज। पर्युषण सभी पर्वो का राजा है जिसकी आज से आराधना प्रारंभ हुई है। ग्रंथाधिराज कल्पसूत्र है जिसका वांचन इस पर्व के अंतर्गत होगा। तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय तीर्थ की भावयात्रा भी इसी तारतम्य में संपादित होगी। मंत्राधिराज नवकार महामंत्र की आराधना भी पर्युषण के अंतर्गत की जावेगी। पर्व दो प्रकार के होते है- लौकिक एवं लोकोत्तर । लौकिक पर्व वह है जिसमें शरीर चुस्त एवं आत्मा सुस्त बनती है। इन पर्वो में खाना, पीना, मिलना, मौज-मस्ती एवं भौतिक सामग्रियो की चकाचौंध रहती है। लोकोत्तर पर्व जैसे पर्युषण में आत्मा चुस्त और शरीर सुस्त बनता है। पर्युषण पर्व में जगत की सभी विशेषताओ जैसे त्याग, वैराग्य, प्रभु भक्ति, सुमीरण, ध्यान, गुरूभक्ति, गंभीरता, उदारता, सहिष्णुता, क्षमापना आदि का समावेष रहता है। इसीलिए इस पर्व को पर्वाधिराज की उपाधि दी है। प्रवक्ता विजय जैन ने बताया कि आज पर्युषण के प्रथम दिवस पर दोपहर 2 बजे नवपद जी पूजन का आयोजन श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ ट्रस्ट मंडल द्वारा किया गया। रात्रि महाआरती पश्चात स्तवन अंताक्षरी एवं भक्ति भावना के विशिष्ट कार्यक्रम हुए।

आगामी कार्यक्रम

आगामी कार्यक्रम के अंतर्गत 1 सितंबर रविवार को प्रात 5.45 बजे प्रतिक्रमण, 7.30 बजे सामूहिक स्नात्र महोत्सव,9.15 बजे प्रवचन, दोपहर में नवपद पूजन छगनलाल रखबचंद जैन त्रिमूर्ति परिवार द्वारा होगा एवं रात्रि महाआरती , धार्मिक ज्ञानवर्धक तंबोला तथा भक्ति भावना के कार्यक्रम आयोजित होंगे।

ग्रेट विजन पब्लिक स्कूल में बच्चों हेतु अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन

शाहपुर। ग्रेट विजन पब्लिक स्कूल शाहपुर में बच्चो के लिए अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन किया गया। जिसमें शाहपुर पुलिस थाना से सोनम साहू मैडम, मीना साबले मैडम, आदेश रघुवंशी, विजय प्रताप, मिथलेश

कालभोर, स्कूल आए। और बच्चों से बात की। अगर बच्चों के साथ कोई आपराधिक घटना हो रही हो। तो उस से कैसे बचना है। और उस घटना के समय बचाव में क्या करना चाहिए। उसकी ट्रेनिंग दी। मोबाइल का सही उपयोग, साइबर सुरक्षा और फिजिकल फिटनेस की भी जानकारी दी। और इसी समय उपस्थित ग्रेट विजन पब्लिक स्कूल शाहपुर के बच्चों के द्वारा अपने साहस का परिचय देते हुए कुछ पंक्तियां पुलिस विभाग के सामने प्रस्तुत की गई। जिससे दोनों के मध्य वार्तालाप बहुत ही सुंदर और हर्षमय रहा, और छोटे बच्चों के मन का डर भी निकल गया। इसी समय ग्रेट विजन पब्लिक स्कूल शाहपुर के प्राचार्य तालिब कुरैशी ने बताया कि बच्चों के लिए जितनी किताबों की पढ़ाई जरूरी है। उतना ही बाहरी घटनाओं और समस्याओं के ज्ञान को सरलता से हल करना यह भी एक बच्चों के लिए शिक्षा है।

स्वास्थ्य संस्थाओं में 24 घण्टे संचालित होगा सुरक्षा नियंत्रण कक्ष

बैतूल। डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों पर बढ़ते हमले को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग ने एडवाइजरी जारी की है। अब इस तरह की किसी भी घटना होने पर जहां जिला अस्पताल में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया जाएगा जो सप्ताह के सातों दिन ऐसी घटनाओं पर पैनी नजर रखेगा। निर्देशों को लेकर आरएमओ डॉ रूपेश पद्माकर का कहना है कि इस तरह की गतिविधि संचालित किए जाने की जानकारी मिली है। अभी शासन से निर्देश नहीं मिले हैं, जैसे ही निर्देश मिलेंगे, उसके मुताबिक सुरक्षा को लेकर अस्पताल में सभी माकुल व्यवस्थाएं की जाएगी।

हिंदी और अंग्रेजी में दी जाएगी कानूनी कार्यवाही की जानकारी- शासन द्वारा जारी आदेशों के अंतर्गत अस्पतालों में विभिन्न स्थानों पर ऐसे बोर्ड लगाए जाएंगे, जिसमें डॉक्टरों पर हमला करने पर संबंधित के खिलाफ होने वाली कानूनी कार्रवाई की सम्पूर्ण जानकारी हो,यह हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषा में चस्पा करना होगा। प्रबन्धन को अपने अस्पतालों में सुरक्षा समिति और हिंसा रोकथाम समिति का गठन करने पर भी बल दिया गया है। दोनों समितियां को स्वास्थ्य संस्थानों में व्यापक सुरक्षा उपाए की योजना बनाने और उन्हें लागू करने का उत्तरदायित्व सौपा गया है।

चिकित्सा कर्मियों को सुरक्षित घर पहुंचाने के लिए करनी होगी परिवहन की व्यवस्था- अस्पताल अनाधिकृत व्यक्तियों के प्रवेश को लेकर भी दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। मरीज के परिजनों की निगरानी के लिए अस्पतालों में आम जनता तथा मरीजों के रिश्तेदारों को प्रवेश पर सख्ती कर पास नीति का कड़ाई से पालन किया जाएगा, साथ ही रात्रि के समय चिकित्साकर्मियों को सुरक्षित घर तक पहुंचाने के लिए परिवहन और आने जाने वाले रास्ते में स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था भी प्रबंधन को करनी होगी। इसके अलावा अस्पतालों में पर्याप्त सीसीटीवी कैमरे लगाने तथा रात के समय में नियमित रूप से पुलिस की गश्त करवाई जाएगी। अस्पताल प्रबंधन को नजदीकी पुलिस स्टेशन के साथ समन्वय स्थापित कर निरंतर समीक्षा करने के भी निर्देश दिए गए हैं, ताकि आवश्यकतानुसार त्वरित पुलिस प्रतिक्रिया सुनिश्चित हो सकें और सुरक्षा मामलों पर नियमित संवाद हो सकें।

वीसी में पीएस के कलेक्टर-एसपी को निर्देश- गुरुवार को प्रदेश

की प्रमुख सचिव वीरा राणा ने प्रदेश के सभी कलेक्टर और एसपी से संभाग स्तर पर अस्पताल की सुरक्षा व्यवस्थाओं को लेकर भी वीसी की है। वीसी में कलेक्टर और एसपी से कहा कि अस्पतालों में सुरक्षा के पर्याप्त प्रबंध हो। बैतूल से नर्मदापुरम पहुंचे कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी और एसपी निश्चल एन. झारिया भी वीसी में शामिल हुए। दोनों अधिकारियों ने बताया कि वीसी में मिले निर्देशों के परिपालन सुनिश्चित किया जाएगा। अस्पतालों का नियमित निरीक्षण कर समन्वय स्थापित करेंगे। ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए गठित आंतरिक समितियों का बेहतर संचालन किया जाएगा।

इनका कहना

प्रमुख सचिव की बैठक में शामिल होने गुरुवार को नर्मदापुरम गए थे। कलेक्टर साहब के साथ वीसी में मिले निर्देशों का पालन करने के लिए प्लान करेंगे। अस्पताल में सुरक्षा के इंतजाम भी कर रूटिन निरीक्षण किया जाएगा।

- निश्चल एन. झारिया, एसपी बैतूल

डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए शासन से निर्देश प्राप्त हो चुके है। इसमें कई बिन्दु ऐसे है, जिनकी व्यवस्था पहले से ही उपलब्ध है और कुछ बिन्दुओं पर बैठक कर विचार किया गया है। शासन के निर्देशों के अनुसार व्यवस्था बनाई जा रही है।

- डॉ. अशोक बारंगा, सिविल सर्जन जिला चिकित्सालय बैतूल

भाजपा महिला मंडल की बहनों और एकल विद्यालय बीजादेही की छात्राओं ने थाने पहुंचकर कर्मचारियों को बांधे रक्षा सूत्र

शाहपुर। भाजपा महिला मोर्चा शाहपुर, चोपना और बीजादेही की बहनों द्वारा आज थाना शाहपुर पहुंचकर थाने में उपस्थित स्टाफ को रक्षा सूत्र एकल अभियान के तहत बांधे। इस समय भाजपा की बहनों ने और एकल

अभियान के तहत एकल विद्यालय बीजादेही की लगभग 30 छात्राओं ने थाना शाहपुर पहुंचकर नगर की रक्षा करने वाले समस्त थाने के स्टाफ के पदाधिकारी और कर्मचारियों को रक्षा सूत्र हर्ष के साथ बांधे। सभी बहनों ने थाना पहुंचते ही पहले थाने के स्टाफ को तिलक लगाकर मिठाई खिलाकर रक्षा सूत्र भाइयों की कलाइयों पर बांधे। और भाइयों के द्वारा भी उन्हें सम्मान दिया गया।

वन भूमि पर तंबू बनाकर रह रहे 150 परिवारों को कलेक्टर ने हटाने के दिए आदेश

प्रूफ रेंज विस्थापन का मामला

बैतूल/भौरा। ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम सीरघाट रैयत के लगभग 150 परिवार तंबू बनाकर कोयलारी के जंगल में रह रहे थे। वही ग्राम कोयलारी के ग्रामीणों द्वारा पूर्व में कलेक्टर को ज्ञापन देकर वन भूमि पर अवैध रूप से रह रहे इन विस्थापित परिवारों को हटाने की मांग की गई थी। जिस पर शनिवार को विस्थापित व ग्रामीणों की समस्याओं को सुनने और समाधान के लिए कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी, विधायक गंगा सज्जन सिंह उईके, एसडीएम अभिजीत सिंह, तहसीलदार, वन विभाग का अमले के साथ शनिवार को विस्थापित ग्रामीणों के साथ बातचीत की और उनके पक्ष को समझने के लिए पुराने कागजातों की जांच की। जिस पर कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी द्वारा विस्थापित परिवारों को वन विभाग की भूमि से हटाने की बात कही। वहीं कलेक्टर का कहना है कि जब शासन द्वारा विस्थापन किया गया था उस समय उन्हें मुआवजा दिया गया था। वही विस्थापित परिवारों से पूछा कि आप इतने साल से कहां रह रहे थे। अब आप वही जाकर रहिए। इस जगह को खाली कर दीजिए। अन्यथा आप पर कार्यवाही की जाएगी। वही ग्राम सीरघाट रैयत के करीब 150 विस्थापित ग्रामवासियों की मुख्य मांग यह रही है कि 1969-70 में प्रूफ रेंज और प्रशासन द्वारा उन्हें खदेड़कर भगाया गया था, लेकिन उन्हें आज तक विस्थापन का कोई लाभ नहीं मिला है। वे चाहते हैं उन्हें उचित विस्थापन का लाभ दिया जाए।

कलेक्टर ने शाहपुर के कोयलारी पहुंचकर विस्थापित परिवारों से की चर्चा

बैतूल। कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने शनिवार को शाहपुर ब्लॉक के कोयलारी जंगल पहुंचकर विस्थापित परिवारों से चर्चा की। इस दौरान कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने विस्थापित परिवारों की समस्याएं सुनीं और संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर विधायक श्रीमती गंगा सज्जन सिंह उईके, एसडीएम अभिजीत सिंह, तहसीलदार एवं वन विभाग का अमला उपस्थित था।

उल्लेखनीय है कि शाहपुर ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम सीरघाट रैयत के कोयलारी जंगल में लगभग 150 परिवार तंबू बनाकर निवासरत है। ग्राम कोयलारी के ग्रामीणों द्वारा पूर्व में कलेक्टर श्री सूर्यवंशी को ज्ञापन सौंपकर कोयलारी के जंगल में बसे लगभग 150 परिवारों को हटाए जाने की मांग की गई थी। विस्थापित परिवारों और ग्रामीणों की समस्याओं को सुनने और समाधान के लिए कलेक्टर श्री सूर्यवंशी कोयलारी के जंगल पहुंचे। विस्थापित ग्रामीणों के साथ बातचीत की और उनके पक्ष को समझने के लिए पुराने कागजों को देखा। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने वन विभाग के एसडीओ को विस्थापित परिवारों के दस्तावेजों को एकत्रित किए जाने के निर्देश दिए।

नेटफ्लिक्स पर वेब सीरीज कंधार विमान हाईजैक की अंतर्कथा

फ्लाइट इंजीनियर अनिल द्वारा लिखित पुस्तक 'आईसी 814 हाईजैक्डः द इनसाइड स्टोरी' पर हाल ही में वेब सीरीज नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है। नेपाल के त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट से इंडियन एयरलाइंस के विमान को हाईजैक कर अफगानिस्तान ले जाया गया था। ये विमान काठमांडू से दिल्ली आ रहा था। इसमें 176 यात्री सवार थे। वेब सीरीज में हाईजैक की इस घटना को लेकर कई ऐसी बातें भी सामने आई हैं, जिनसे अभी तक आम लोगों अनजान थे।

वेब सीरीज 'आईसी 814 द कंधार हाईजैक' की कहानी 24 दिसंबर 1999 के कंधार हाईजैक पर आधारित है। वेब सीरीज बनाने के लिए अनुभव सिन्हा ने काफी रिसर्च की थी। फ्यूल की कमी के कारण पायलट को अमृतसर से लाहौर तक जाने के लिए 200 फीट की ऊंचाई पर प्लेन उड़ाने के लिए मजबूर होना पड़ा। पायलट के गले पर अब तक गन पॉइंट का निशान है। कंधार हाईजैक से जुड़ी इस वेब सीरीज में अहम भूमिका में विजय वर्मा, पंकज कपूर, नसीरुद्दीन शाह, मनोज पाहवा आदित्य शर्मा, कुमुद मिश्रा और यशपाल शर्मा जैसे मंझे हुए कलाकार हैं। इस वेब सीरीज में दिया मिर्जा भी काफी समय के बाद किसी बड़े प्रोजेक्ट में वापसी करते हुए दिखाई दी।

नेपाल के त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट से इंडियन एयरलाइंस के विमान को हाईजैक कर अफगानिस्तान ले जाया गया था। ये विमान काठमांडू से दिल्ली आ रहा था। इसमें 176 यात्री सवार थे। हाईजैकर्स इस विमान में यात्रियों के वेश में चढ़े थे। विमान को काठमांडू से हाईजैक कर कंधार ले जाया गया। इस बीच विमान को ईंधन भरने के लिए दुबई एयरपोर्ट पर रोका गया, जहां 28 यात्रियों को उतारा गया। जिनमें ज्यादातर बच्चे और महिलाएं शामिल थीं। इनमें एक घायल यात्री भी शामिल था, जिसकी हाईजैकर्स से झड़प हो गई थी। इस यात्री की बाद में मौत हो गई थी।

इतिहास के पन्नों में दर्ज इस घटना को आज फिर इसलिए याद किया जा रहा है, क्योंकि हाल ही में एक वेब सीरीज 'आईसी 814: द कंधार हाईजैक' रिलीज हुई है। वेब सीरीज में हाईजैक की इस घटना को लेकर कई ऐसी बातें भी सामने आई हैं, जिनसे अभी तक आम लोगों अनजान थे। विमान ने जब काठमांडू के त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट से उड़ान भरी, तो सबकुछ सामान्य नजर आ रहा था। विमान में ज्यादा यात्री भारतीय थे, जो दिल्ली आ रहे थे। लेकिन, जैसे ही विमान भारतीय वायु सीमा में

दाखिल हुआ, हाईजैकर्स खड़े हो गए और पूरे विमान को अपने कब्जे में ले लिया। उन्होंने पायलट और यात्रियों पर बंदूकें तान दीं, उनके साथ मारपीट की और विमान को दिल्ली से पाकिस्तान की ओर मोड़ दिया। विमान में इतना ईंधन नहीं था कि उसे सीधे अफगानिस्तान ले जाया जा सके। इसलिए हाईजैक विमान कुछ देर अमृतसर में रुका था और फिर लाहौर के लिए रवाना हो गया। विमान पाकिस्तान सरकार से इजाजत लिए बिना रात 8:07 बजे लाहौर में उतरा, जैसा कि पाक सरकार ने बताया। अगली सुबह विमान लाहौर से दुबई के लिए रवाना हुआ और वहां से सीधे अफगानिस्तान के कंधार पहुंच गया।

फ्लाइट इंजीनियर अनिल द्वारा लिखित पुस्तक 'आईसी 814 हाईजैक्डः द इनसाइड स्टोरी' में बताया गया कि शाम 4.39 बजे तक फ्लाइट भारतीय हवाई क्षेत्र में पहुंच गई और कॉकपिट में मौजूद लोग चाय और कॉफी पी रहे थे। तभी एक शख्स कॉकपिट में घुस आया। पायलट ने जैसे ही इसे देखा, वे समझ गए कि मुसीबत में हैं। कॉकपिट में दाखिल हुए लोगों के चेहरों ढके हुए थे। उनकी आंखें भी मंकी कैप में बने स्लिट के पीछे फोटोक्रोमैटिक लेंस के पीछे छिपी थीं। इस शख्स के बाएं हाथ में ग्रेनेड और दाहिने हाथ में रिवॉल्वर थी। इसके बाद हाईजैकर्स चिल्लाया 'कोई होशियारी नहीं करेगा। कोई हिलेगा नहीं। तय्यारा हमारे कब्जे में है। किसी ने भी हरकत की या होशियारी दिखाने की कोशिश की, तो अच्छा नहीं होगा। हमने विमान को कब्जे में ले लिया है। विमान शाम 4.53 बजे हाईजैक कर लिया गया था।

विमान के हाईजैक होने के कुछ घंटों बाद ही हाईजैकर्स ने बढ़ती हुई मांगें करनी शुरू कर दीं। इनमें भारतीय जेलों में बंद आतंकवादियों की रिहाई की मांग भी शामिल थी। उन्होंने 200 मिलियन अमेरिकी डॉलर की फिरौती भी मांगी। विमान 8.33 बजे अफगानिस्तान के कंधार हवाई अड्डे पर उतरा और 31 दिसंबर तक वहीं रुका रहा। यहीं से भारतीय सरकार और हाईजैकर्स के बीच बातचीत हुई। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में तत्कालीन विदेश मंत्री जसवंत सिंह छोड़े गए तीन आतंकियों मुश्ताक अहमद जरगर, अहमद उमर सईद शेख और मौलाना मसूद अजहर को कंधार लेकर गए। शुरुआत में अपहर्ताओं ने भारत में बंद 36 आतंकवादियों की रिहाई की मांग की, इसमें जिसमें मसूद अजहर भी शामिल था। ये वही मसूद अजहर है, जिसने बाद में जैश-ए-मोहम्मद आतंकी संगठन बनाया। यही संगठन ने 2019 पुलवामा हमलों में शामिल था।

हाईजैक की इस घटना ने पूरे भारत को हिलाकर रख दिया था। इसे लेकर भारत में विरोध प्रदर्शन भी हो रहे थे। भारत में उस समय एनडीए की सरकार थी और अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री मौजूदा भारत सरकार के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल भी उस ऑपरेशन कंधार में शामिल थे। कंधार पर उस समय तालिबान का कब्जा था। हालांकि, भारत सरकार ने कहा नहीं था, लेकिन उन्होंने मामले में खुद हस्तक्षेप किया। हाईजैकर्स ने इसके बाद अपनी कुछ मांगें कम कर दीं। हालांकि, वे आतंकियों की रिहाई की मांग पर अड़े रहे। आखिरकार यात्रियों की सुरक्षा के बदले में भारतीय जेलों से तीन आतंकियों को कंधार ले जाकर छोड़ने का फैसला लेना पड़ा। इसे लेकर सरकार की आलोचना भी हुई थी।

कंधार हाईजैक की घटना आज सरकार की सबसे दुखती रग है। लेकिन, तब सरकार के सामने कोई विकल्प नहीं था। 31 दिसंबर को सरकार और अपहरणकर्ताओं के बीच समझौते के बाद दक्षिणी अफगानिस्तान के कंधार एयरपोर्ट पर अगवा रखे गए सभी 155 बंधकों को आखिरकार रिहा कर दिया गया। 31 दिसम्बर 1999 की रात ही फ्लाइट 814 के छोड़े गए बंधकों को एक विशेष विमान से भारत वापस लाया गया। लेकिन, ये खौफ के 8 दिन विमान में बैठे लोगों के साथ-साथ भारत के हर नागरिक के लिए खौफ भरे थे। लोगों को डर था कि विमान में सवार लोगों को कुछ हो न जाए, फिर इस विमान में कुछ विदेशी नागरिक भी थे।

रियल बॉक्स

यादों में बसे 'दूरदर्शन' के वे सीरियल

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

समय के साथ बहुत कुछ बदला और उसके साथ मनोरंजन के तरीके भी बदले। फिल्मों का लम्बा दौर चला, कई बार उसमें भी बदलाव आया। यह दौर आज भी चल रहा है। फर्क इतना आया कि पीढ़ियों बदलने के साथ दर्शकों की पसंद बदलती गई। 80 के दशक में फिल्मों के साथ मनोरंजन का नया माध्यम टेलीविजन भी इसमें जुड़ गया। इससे दर्शकों को घर में बैठकर मन बहलाने का विकल्प मिल गया। सबसे पहले आया 'दूरदर्शन' जिसने दर्शकों का बरसों तक मनोरंजन किया। आज भले ही 'दूरदर्शन' मनोरंजन की दौर में पिछड़ गया हो, पर उस पीढ़ी के दर्शकों की यादों में आज भी दूरदर्शन के सीरियल चस्पा है। शुरू में दूरदर्शन के प्रसारण का समय भी सीमित था। पर, जब भी कोई कार्यक्रम शुरू होता, पूरा परिवार टीवी के सामने बैठ जाता था। जिन घरों में टीवी नहीं था, वे भी पड़ौसी या परिचितों के यहां बिन बुलाए पहुंच जाते थे। ये दर्शक सिर्फ मनोरंजन के कार्यक्रम देखने के लिए ही नहीं जुटते थे, बल्कि वे कृषि दर्शन जैसे कार्यक्रमों को देखने का भी मौका नहीं छोड़ते!

भारतीय टेलीविजन इतिहास में 'हम लोग' पहला सीरियल था, जो 7 जुलाई 1984 को दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ। दर्शकों को यह शो इतना पसंद आया था कि इसके चरित्र विख्यात हो गए! इस सीरियल की कहानी लोगों की रोजमर्रा की बातचीत का हिस्सा बन गई थी। इस सीरियल ने देश के मध्यम वर्ग की ज़िंदगी को बहुत नजदीक से दर्शाया था। इसकी लोकप्रियता का पैमाना कुछ वैसा ही था, जैसा बाद में 'रामायण' और 'महाभारत' का रहा! 'रामायण' को भारतीय टेलीविजन के सबसे सफल सीरियलों में से एक माना जाता है। रामानंद सागर के इस सीरियल का असर ऐसा था, जिससे दर्शकों की धार्मिक भावनाएं उभरकर सामने आईं! जबकि, निर्माता रामानंद सागर पर इसका इतना असर हुआ कि उन्होंने इसके बाद फ़िल्में बनाना ही छोड़ दी। दूरदर्शन पर ये सीरियल जब पहली बार प्रसारित किया, तो गाँव व शहरों में कर्फ्यू जैसा माहौल हो गया था। आज की पीढ़ी को ये बात अचरज लग सकती है, पर सच यही था। सीरियल के समय सड़कें खाली हो जाती थी। जो जहां वहीं किसी तरह 'रामायण' देखने लगता।

इसके बाद में बीआर चोपड़ा ने भी 'महाभारत' बनाकर छोटे परदे पर कुछ ऐसा ही जादू किया था। ये सीरियल 2 अक्टूबर 1988 को पहली बार प्रसारित हुआ। इस सीरियल की शुरुआत सबसे खास हिस्सा होता तब होता था, जब हरीश भिमानी की आवाज गूंजती थी 'मैं समय हूं!' ब्रिटेन में इस धारावाहिक का प्रसारण बीबीसी ने किया, तब इसकी दर्शक संख्या 50 लाख पार कर गई थी। 'दूरदर्शन' के सफल सीरियलों में 'चंद्रकांता' भी रहा, जिसका प्रसारण 4 मार्च 1994 को शुरू हुआ था। देवकीनंदन खत्री के फंतासी उपन्यास पर बने इस सीरियल को दर्शकों ने बेहद पसंद किया।

दूरदर्शन पर 1994 में प्रसारित हुए 'अलीफ लैला' के दो सीजन में 260 एपिसोड प्रसारित हुए! जादू, जिन्न, बोलते पत्थर, एक मिनट में गायब हो जाना, राजा व राजकुमारी की कहानी को मिलाकर बने इस सीरियल को लोग आज भी याद करते हैं। '1001 नाइट्स' पर आधारित इस धारावाहिक में मिस्र, यूनान, फ़ारस, ईरान और अरब देशों की बहुत सी रोमांचक कहानियां थीं जिनके हीरो सिंधबाद, अलीबाबा और चालीस चोर, अलादीन हुआ करते थे। रामानंद सागर ने 'रामायण' से पहले 'विक्रम और बेताल' बनाया था। इस धारावाहिक के सिर्फ 26 एपिसोड ही प्रसारित हुए थे। ये 1985 में दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ था। ये महाकवि सोमदेव की लिखी 'बेताल पच्चीसी' पर आधारित था।

'जंगल, जंगल बात चली है पता चला है ऐसे ...' ये वो लाइन है, जिन्हें गुलजार ने 'जंगल बुक' सीरियल के लिए लिखा था। ये लाइनें और ये सीरियल आज भी उस दौर के दर्शकों के दिलों में बसा है! बच्चों से लेकर बड़ों तक को बेसब्री से इंतज़ार रहता था। दूरदर्शन पर ये जापानी एनिमेटेड इंग्लिश सीरीज़ आती थी जिसे हिंदी में रूपांतरित किया था। कई गांव में तब बिजली नहीं होती थी, तो लोग बैटरी से टीवी को जोड़कर ये शो देखते थे। यही क्यों 80 और 90 के दशक में दूरदर्शन पर प्रसारित ऐसे कई सीरियल है, जो बहुत ज्यादा पसंद किए गए। 'हम लोग' और 'बुनियाद' तो लोकप्रियता में मील का पत्थर थे। इसके अलावा भी ऐसे कई सीरियल हैं, जो निर्माण के मामले में भले ही आज से हल्के दिखाई देते हों, पर अपने कथानक के कारण दर्शकों की पहली पसंद थे। आरके नारायण की कहानियों पर आधारित 'मालगुडी डेज़' भी बच्चों का पसंदीदा सीरियल था, जिसका प्रसारण 1987 में हुआ था। इसमें स्वामी एंड फ्रेंड्स तथा वेंडर ऑफ स्वीट्स जैसी लघु कथाएं व उपन्यास शामिल थे। इसे हिन्दी और अंग्रेजी में बनाया गया था। इसके 39 एपिसोड

प्रसारित हुए, फिर इसे 'मालगुडी डेज़ रिटर्न' नाम से पुनर्प्रसारित भी किया गया। हमारे देश के बच्चों को अपना पहला सुपर हीरो 'शक्तिमान' 27 सितम्बर 1997 को मिला था। इसका अपना अलग ही क्रेज़ था। 400 एपिसोड वाला यह शो करीब 10 साल तक चला!

'भारत एक खोज' भी दूरदर्शन का 53 एपिसोड तक चला एक कालजयी कार्यक्रम था। यह 1988 से 1989 के बीच हर रविवार प्रसारित होता रहा। जवाहरलाल नेहरु की किताब 'डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' (भारत की खोज) पर आधारित यह टीवी सीरीज़ शायद टेलीविज़न के इतिहास में अब तक का सबसे बेहतरीन रूपांतरण है। इसके निर्माता और निर्देशक हिन्दी फिल्मों के मशहूर निर्देशक श्याम बेनेगल थे। अंकुर, निशांत, मंथन और भूमिका जैसी फिल्मों के लिए चर्चित बेनेगल समानांतर सिनेमा के बड़े निर्देशकों में हैं। बेनेगल ने जो सीरियल बनाया, वह न सिर्फ दूरदर्शन बल्कि देश के टीवी सीरियलों के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ। 80 के दशक में जब 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे सीरियलों ने हर घर में अपनी जगह बनाई थी। उस समय सरकार को लगा कि भारत के इतिहास पर भी एक टीवी सीरियल बनाया जाना चाहिए। बेनेगल ने देश के दर्शकों तक भारत की ऐसी अनसुनी कहानी को पहुंचाने का मुश्किल काम किया। वास्तव में श्याम बेनेगल की दिलचस्पी 'महाभारत' बनाने में ज्यादा थी। लेकिन, वह पहले ही बीआर चोपड़ा को दिया जा चुका था। जब उनके पास भारतीय इतिहास पर 'भारत एक खोज' बनाने का ऑफर आया तो वे मना नहीं कर सके।

दूरदर्शन पर धार्मिक सीरियलों में रामायण, महाभारत, जय हनुमान, श्री कृष्णा, नमः शिवाय, जय गंगा मैया। ऐतिहासिक सीरियलों में टीपू सुल्तान, अकबर द ग्रेट, द ग्रेट मराठा, भारत एक खोज, चाणक्य। पारिवारिक सीरियलों में स्वाभिमान, अंजुमन, संसार, बुनियाद, हम लोग, कशिश, फ़र्ज़, वक्त की रफ़्तार, अपराजिता, इतिहास, शांति, औरत, फरमान, इंतज़ार और सही, हम पंछी एक डाल जैसे कालजयी सीरियल भला कौन भूला होगा। कॉमेडी और मनोरंजन वाले सीरियल ये जो है जिंदगी, मुंगेरीलाल के हसीन सपने, विक्रम और बेताल, सुराग, मालगुडी डेज, तेनालीराम, व्योमकेश बक्शी, कैप्टेन व्योम, चंद्रकांता, शक्तिमान, आप-बीती, फ्लॉप शो, अलिफ़ लैला, आँखें, देख भाई देख, एक से बढ़कर एक, ट्रक धिना धिन, तहकीकात जैसे कई नाम है।

उस समय एनिमेशन इंडस्ट्री ज्यादा विकसित नहीं थी, इसलिए विदेशी सीरियलों को डब करके परोसे गए। डिज्नी के मोगली जंगल बुक, टेलस्पिन, डक टेल्स, अलादीन, ऐलिस इन वंडरलैंड, गायब आया जैसे सीरियल बहुत देखे गए। 'सुरभि' भी दूरदर्शन का सबसे लंबे समय तक चलने वाली सीरीज थी, जिसका नाम 'लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में भी दर्ज था। शो देखने वाले हर हफ्ते 10 लाख चिट्ठियां भेजते थे। इस सीरीज को रेणुका शहाणे और सिद्धार्थ काक होस्ट करते थे। 'सुरभि' 1990 से 2001 तक चला था। 1991 में इसे प्रसारित नहीं किया गया। करीब 10 साल तक चले इस शो के 415 एपिसोड प्रसारित हुए। 'सुरभि' दूरदर्शन का पहला ऐसा कार्यक्रम था, जिसमें नियमित इनामी प्रतियोगिता होती थी। भारत की संस्कृति और सामान्य ज्ञान से संबंधित सवाल पूछे जाते थे। इनाम में भारत के विभिन्न राज्यों के टूर-पैकेज दिए जाते थे। एक एपिसोड में मचान बांधकर लगाए गए पौधे दिखाए गए थे। उन मचानो से बेलें लटक रही थी। पूछा गया था कि ये किस चीज़ की खेती है। इसके जवाब में उस एपिसोड में लाखों पोस्टकार्ड मिले, जो रिकॉर्ड था। इसी से अंदाजा लगाया गया कि 'सुरभि' कितना लोकप्रिय सीरियल था। लेकिन, अब दूरदर्शन उस पीढ़ी की यादों में दर्ज होकर रह गया।

'कृषि दर्शन' दूरदर्शन का क्लासिक शो रहा है। इसमें खेती-बाड़ी और किसानी से संबंधित जानकारी दी जाती थी। इसका 26 जनवरी 1967 को प्रीमियर किया था। 'कृषि दर्शन' के 16,780 एपिसोड प्रसारित हुए। इसके 62 सीजन आए थे। इसी तरह चित्रहार' में बॉलीवुड के नए और पुराने सुपरहिट गानों को दिखाया जाता। 80 और 90 के दशक में इस शो का भी खूब क्रेज रहा था। यह भी दूरदर्शन के सबसे लंबे समय तक चलने वाले शो में शामिल रहा। इसने 12,000 एपिसोड पूरे किए थे। इसी तरह रंगोली' जैसा फ़िल्मी गीतों का कार्यक्रम और 'फूल खिले हैं गुलशन गुलशन' टॉक शो भी उस दौर के दर्शकों को याद होगा। इसमें फिल्म और टीवी हस्तियां अपनी जिंदगी के बारे में खुलकर बात करती थी। इसे एक्ट्रेस तबस्सुम होस्ट किया करती थीं। 'फूल खिले हैं गुलशन गुलशन' साल 1972 से 1993 तक प्रसारित हुआ। यह भी दूरदर्शन के लंबे समय तक चलने वाले शो में से एक रहा। लेकिन, अब ये टीवी शो पिछली पीढ़ी की यादों में ही दर्ज होकर रह गए।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मी टीचर कभी बेटर कभी फटीचर

अशोक जोशी

बॉलीवुड में शिक्षकों पर आधारित कई फिल्में प्रदर्शित हुई, जिनमें शिक्षकों के बहुरंगी व्यक्तित्व को दिखाया गया। पहले इस विषय पर कुछ सार्थक फिल्में बनी, लेकिन उसके बाद ज्यादातर

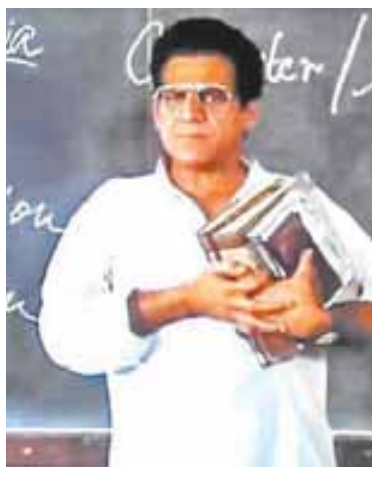

फिल्मों में शिक्षकों को मसखरा दिखाया जाकर इसका मजाक उड़ाया गया। कई सितारों ने शिक्षकों के ऐसे ही अनोखे रूप को पर्दे पर जीवंत किया है। बॉलीवुड में शिक्षा पर आधारित फिल्में समय-समय पर देखने को मिलती रही हैं जो शिक्षा का असल महत्व समझाती हैं।

माता-पिता तो हमें जन्म देते हैं। लेकिन, शिक्षक हमारे जीवन को आकार देता है। शिक्षक का हमारी जिंदगी में क्या महत्व होता है यह बात हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं। स्कूल, कॉलेज और फिर जिंदगी में हमें तरह तरह के शिक्षक मिलते हैं। कुछ हमें जीवन के कठिन स्थितियों का पाठ सिखाते हैं तो कुछ शिक्षकों संग मस्ती करते करते हम बहुत सी बातें जान जाते हैं। लेकिन, फिल्मों में शिक्षक का चेहरा अलग ही बदला हुआ दिखाई देता है। कई फिल्में भी 'गुरु' की भूमिका में आती हैं और सिनेमाघर को 'क्लास-रूम' का दर्जा देकर बहुत कुछ सिखा-पढ़ा जाती हैं।

हिन्दी फिल्मों में अध्यापक और शिक्षा की भूमिका को कभी भी अनदेखा नहीं किया गया। सबसे पहले जो नाम एकदम से याद आता है वह है 1954 में आई सत्येन बोस निर्देशित फिल्म 'जागृति' का। अभिभट्टाचार्य अभिनीत इस फिल्म के अध्यापक शेखर का मानना है कि असली पढ़ाई बंद कमरों की बजाय बाहर प्रकृति की गोद में बैठ कर ही हो सकती है। वह अपने छात्रों को भारत-दर्शन के लिए ले जाता है और गाता है 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं झांकी हिंदुस्तान की, इस मिट्टी से तिलक करो यह धरती है बलिदान की। इस फिल्म का ही असर था कि इसके बाद छात्र-छात्राओं को भारत भ्रमण के लिए ले जाए जाने की परंपरा को बल मिला।

इसके बाद आयी फिल्म प्रोफेसर में शम्मी कपूर ने, शागीर्द में आईएस जौहर ने शिक्षक बनकर उछल कूद ही ज्यादा की है। लेकिन विनोद खन्ना की फिल्म इम्तिहान में शिक्षक का गंभीर व्यक्तित्व उभर कर सामने आया जिसे दर्शकों ने पसंद किया। राजेश खन्ना ने लोकप्रियता के बाद मास्टर जी और रोटी में शिक्षक की भूमिका निभाई जो टीचर कम फटीचर ज्यादा थी। इससे पहले पर्दे पर शिक्षकों का मानमर्दन होता 1972 में गुलजार निर्देशित

'परिचय' आयी। फिल्म का नायक एक ऐसे अमीर घर के बच्चों को पढ़ाने के लिए आता है जिनके माता-पिता नहीं हैं और जो अपनत्व से महरूम भी। वह न सिर्फ इन्हें पढ़ना सिखाता है बल्कि इनके भीतर संस्कारों का संचार भी करता है।

वी शांताराम की 1967 में आई फिल्म 'बूंद जो बन गई मोती' का नायक भी एक आदर्शवादी अध्यापक है जो 'यह कौन चित्रकार है' गाते हुए बच्चों को प्रकृति का पाठ पढ़ाता है. राज कपूर की 'श्री 420' में स्कूल टीचर विद्या (नरगिस) बच्चों को गाते हुए पढ़ाती है इचक दाना बिचक दाना। इस फिल्म का परिष्कृत रूप लेकर राजकपूर मेरा नाम जोकर में आए थे, जिसकी टीचर तीतर के दो आगे तीतर गाते अंग प्रदर्शन करती थी। 1980 में आयी फिल्म मनपसंद में देव आनंद टीचर बने जो टीचर कम देव आनंद ज्यादा दिखाई दिए।

1991 में आई नाना पाटेकर निर्देशित फिल्म 'प्रहार' एक कमांडो ट्रेनिंग स्कूल के बारे में है। लेकिन, यह फिल्म यह भी बताती है कि अपने छात्रों में अच्छे गुणों को भरने के लिए प्रेरणा का काम उनके अध्यापक, उनके गुरु को ही करना पड़ता है। नाना पाटेकर इस फिल्म में सेना के कमांडो ट्रेनिंग स्कूल के कड़क, अनुशासनप्रिय ट्रेनर

की भूमिका में अपने छात्रों को जीवन जीने और देश पर मर-मिटने का पाठ पढ़ाते हैं। 2003 में आई राजकुमार हिरानी की फिल्म 'मुन्नाभाई एमबीबीएस' मुख्यतः चिकित्सा-क्षेत्र में व्याप्त असंवेदनशीलता पर आधारित है। लेकिन, पढ़ाई-लिखाई पर भी यह सार्थक टिप्पणियां कर जाती है। हेराफेरी से मेडिकल कॉलेज में दाखिला लेने वाला एक टपोरी मुन्ना यहां आकर सबको यह जता जाता है कि ज्ञान भले ही किताबों में बंद हो लेकिन किसी को भला-चंगा करने के लिए इन किताबी हदों से बाहर भी जाना चाहिए।

2005 में प्रदर्शित संजय लीला भंसाली की 'ब्लैक के केंद्र में एक ऐसा अध्यापक है जो अपनी गूंगी, बहरी और अंधी शिष्या को पढ़ा-लिखा कर सक्षम बनाता है। अंत में वही शिष्या बुजुर्ग और अक्षम हो चुके अपने गुरु को सहारा देती है। 2004 में आई आशुतोष गोवारीकर की फिल्म 'स्वदेस' किताबी बातों को सहजता से समझने और उस ज्ञान को अपने लोगों के उत्थान के लिए उपयोग में लाने की सीख देती नजर आई। महात्मा गांधी के दर्शन, उनके विचारों और शिक्षाओं के बारे में जितना ज्ञान और जो सीख हजारों किताबें मिल कर नहीं दे पाईं, वह अकेली 'लगे रहो मुन्नाभाई' (2006) ने दे दिया।

पढ़ाने-सिखाने वाली फिल्मों की धारा में प्रभावशाली बदलाव तो आया 2007 में प्रदर्शित आमिर खान की फिल्म 'तारे जमीन पर' के बाद। इस फिल्म में उठाए गए , जिन्हें काफी चर्चा मिली कि क्या सभी बच्चों को एक ही तरीके से पढ़ाया जाना उचित है? कहीं दूसरे बच्चों से होड़ के चक्कर में हम अपने बच्चों से उनका बचपन तो नहीं छीन रहे। इस फिल्म का आर्ट-टीचर राम निकुंभ कहता भी है 'अगर घोड़े दौड़ाने का इतना ही शौक है तो रेसकोर्स में जाओ, बच्चे क्यों पैदा करते हो?' इस फिल्म का असर भी हुआ और शिक्षा-क्षेत्र से जुड़े लोगों, शिक्षाविदों व अभिभावकों में चेतना भी जागी।

2009 में आई राजकुमार हिरानी की फिल्म '3 ईडियट्स' को भी पढ़ने-पढ़ाने के तौर-तरीकों के चलते खासी चर्चा मिली. यह फिल्म अपने तीन मुख्य नायकों के द्वारा यह संदेश देती दिखाई दी कि जीवन में सफलता पाने के लिए उस काम को करना अधिक सही है जिसमें आपका मन हो और जिसे आप बेहतर ढंग से कर सकें। यह फिल्म बताती है कि पढ़ने से ज्यादा गढ़ना जरूरी है। कभी-कभी पढ़ने में 'ईडियट' लगने वाले लोग भी जीवन में दूसरों से अच्छा कर जाते हैं। उसके बाद से लेकर अभी तक ऐसी कोई फिल्म नही आई जो शिक्षक और शिक्षा के पहलूओं पर सार्थक तरीके से प्रकाश डालती हो।

रौशनी के शहर में... अंधेरगर्दी !

प्रकाश पुरोहित

राज्य **पेरिस में पहला ही दिन था, फुटपाथ (वहां अभी भी हैं)** पर चलते हुए सड़क पर चल रही कार के अंदर नजर गई तो धक्क रह गया। अंदर कोई नहीं और कार चली जा रही थी। सुना तो था, अब बगैर ड्राइवर की कार होती है, सोचा, यहां चलने भी लगी है। थोड़ा आगे जाकर एक और कार देखी, आगे की सीट पर कोई बैठा तो था, मगर उसके हाथ में स्टीयरिंग नहीं था और कार मजे से चली जा रही थी। और थोड़ी दूर चला तो देखा, पास वाले के हाथ में स्टीयरिंग है और ड्राइवर हाथ पर हाथ धरे बैठा था। जब किसी से इसका रहस्य पूछा तो मालूम पड़ा यहां 'लेफ्ट हेंड ड्राइविंग' है। तभी तो, मैं कहूं कि जिस बस के लिए मैं इधर खड़ा होता हूं, सामने जा कर खड़ी हो जाती है।

शुरू में तो बड़ा अटपटा लगता रहा कि बस में बैठे हैं और जहां ड्राइवर होता है, वहां कोई नहीं। वैसा ही एहसास होता है, जैसे रोबोट ड्राइवर की गाड़ी में सफर कर रहे हैं। वैसे मुझे नहीं मालूम कि रोबोट राइट हैंड होता है या लेफ्ट हैंड। आपको यही लगता है कि ठीक दिशा में जा रहे हैं, लेकिन सामने वाला आपको घूरता निकल जाता है कि गलत साइड क्यों चल रहे हो। बाएं से चलिए, अपन ने तो यही सीखा है, अब इस उम्र में दाएं से चलिए तो नहीं सीख सकते ना! वहां ऐसा भी नहीं है कि पैदल चलते सड़क पर ही उतर जाएं कि लोकल-जन सामने से चले आ रहे हैं धड़धड़ाते हुए। इस दिशा-भ्रम ने मुझे बहुत भटकाया है कि जाना तो उत्तर और चले गए दक्षिण, अब ऐसे में हाथ में पता भी है तो कोई क्या कर लेगा।

जैसे हम दीवाली का अटाला निकालते हैं और फिर सहेज कर रख देते हैं ना अगली दीवाली के लिए, ठीक यही हाल इस देश के हैं। देश के भले ना हों, पेरिस के तो हैं। जो, जैसा है, वैसा ही रहेगा। बताइए, 1924 में बना स्टेडियम आज भी जस-का-तस खड़ा है, जहां इस बार हॉकी मैच खेले गए। तीन तरफ छत नहीं थी उस समय तो आज भी नहीं है। हम होते तो अब तक ना जाने कितनी बार नया बना चुके होते, फिर भले ही अगले साल ही क्यों ना भरभरा कर गिर पड़े। गिरने के डर से हम बनाना नहीं छोड़ सकते, लेकिन ये डरपोक ना जाने क्या लगाव है, पुरानी चीजों से कि उस पर ही पैसे फूंकते रहते हैं। अगर नया होता है तो अपना नाम भी उससे जुड़ता है, जैसे अहमदाबाद का मोदी स्टेडियम। किसे याद है, उसे पहले मोटेरा कहा जाता था। पेरिस में नेताओं को अमर होना भी नहीं आता है। किसी की बनाई आपने संभाल ली तो आपका क्या बना। नया बनेगा तो नाम भी बनेगा।

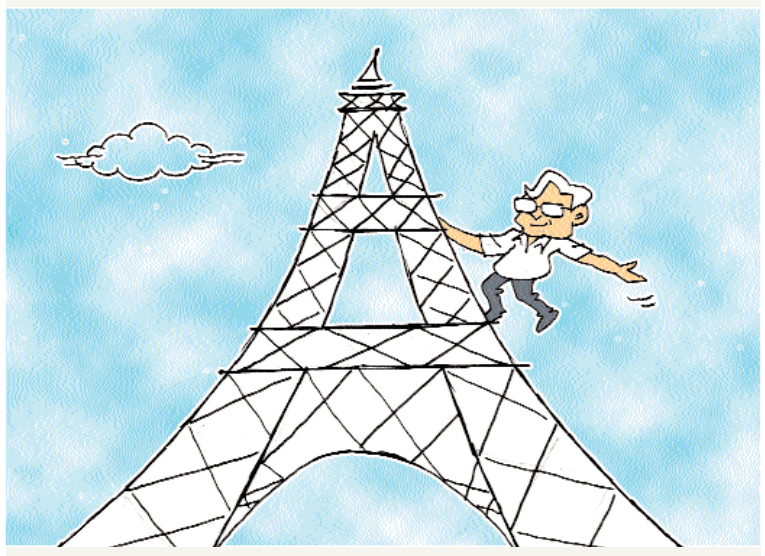

यहां के मेट्रो स्टेशन, तौबा-तौबा! न जाने कब के बाबा आदम के जमाने के हैं! आज भी इतनी सीढ़ियों वाले हैं कि ऊपर पहुंचने पर पर्वतारोही का गर्व होने लगता है। कई स्टेशन तो अंदर ही अंदर इतने लंबे होते हैं कि बगैर मेट्रो के भी पैदल घर पहुंच सकते हैं, कम समय में, लेकिन यहां के लोग जीवट हैं कि मेट्रो से आते-जाते हैं और कार का उपयोग कम से कम करते हैं। हमारी मजबूरी यह है कि टैक्सी परवड़ती नहीं, इसलिए मरता क्या ना करता!

पहले दिन मेट्रो स्टेशन पर ट्रेन आई, दरवाजे खुले और अपन समा गए। अपना स्टेशन आया, दरवाजे खुले और अपन बाहर। कितना बढ़िया है ना यह सिस्टम! अगले स्टेशन पर, अपन खड़े थे, ट्रेन आई, आगे बढ़े कि अब दरवाजा खुलेगा, मगर कुछ नहीं हुआ और ट्रेन चल दी, जैसे मुझे देख लिया हो कि इसे तो नहीं बैठाना है। किसी से ट्रेन की बेरुखी का सबब पूछा तो उसने बताया कि 'ठहरो, अगली ट्रेन आने दो।' जब आई तो उसने दरवाजे पर लगा पुश बटन दबाया, दरवाजा खुल गया। मतलब यहां खुद की कोशिश से दरवाजा वैसे ही खुलता है, जैसे किस्मत का।

और अगले स्टेशन पर ट्रेन आई, अपने आप दरवाजा नहीं खुला तो अपन झटके से पुश बटन दबाने आगे बढ़े तो वहां कुछ भी नहीं था और दरवाजा भी अड़ा था कि 'खोल सको तो खोल लो, अपन तो नहीं खुलने के।' फिर विदेशी सहायता ली। उस बंदे ने विधि-विधान बताया कि इसमें ना तो 'खुल जा सिम सिम' वाला सिस्टम है और ना ही पुश बटन से ही यह खुलने वाला है। कुछ नहीं, आसान तरीका है, ये हेंडल देख रहे हैं ना, जैसा हमारे घरों के बाहरी दरवाजे पर होता है, इसे पकड़ कर उलटा घुमा दो, खुल जाएगा। चलिए, दरवाजा खोलने की एक और विधि से परिचय हुआ। जब स्टेशन आया और उतरने की तैयारी की तो दरवाजे पर हमारी अपील का कोई असर नहीं हुआ। ट्रेन ने स्टेशन छोड़ दिया और हम अपने गंतव्य स्टेशन को पीछे जाते देखते रहे। फिर किसी ने समझाया कि कुछ नहीं अगली ट्रेन से पीछे चले जाओ और वहां अंदर भी उसी तरह से दरवाजा खोलना, जैसे कि आते समय खोला था। इस ट्रेन से उस ट्रेन का पैदल सफर इतना होता है कि ट्रेन में बैठ कर जाने का सुख ही बिला जाता है।

यह तो तकनीकी पहलू है, लेकिन उस भाषा का क्या करें, जो मेट्रो में या स्टेशन पर दर्ज है। लिखते क्या हैं और बोलते कुछ और ही हैं। आप लिखें, खुदा बांचे, सिर्फ सुना था, यहां आप हर पल देख सकते हैं। पेरिस को रौशनी का शहर कहा जाता है, लेकिन जैसी अंधेरगर्दी तो कहीं नहीं मिलेगी। भला हो हमारे एशियाई बंदों का, उनके रहते आपको कभी इस देश में अजनबीपन नहीं लगेगा। बेचारे फ्रेंच तो फोकट ही बदनाम हैं, क्योंकि उनकी आबादी तो यहां बीस फीसद भी नहीं है, और जो हैं, वो भी पेरिस छोड़ गए हैं। हम लोग सुधार रहे हैं इस देश को, अंग्रेजी का अ ना बोलने वाले फ्रांस में, अच्छा लगा देख कर कि यहां एक स्टेशन का नाम हिंदी में था। यकीनन 'पापा' का ही असर होगा!

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

जाने कितने गुमनाम चेहरे हमसे पहचान मांगते हैं

अमृता जब अपने बच्चों के साथ दिल्ली शिफ्ट हुई थी तब मात्र 125 रूपये में उन्होंने रेडियो स्टेशन पर काम किया। तब उनका संबोधन हुआ करता था ''आवाज़ की दुनिया के दोस्तों'' जो बहुत प्रसिद्ध हुआ। उन्हें नहीं पता था कि इक नौजवान सामने की बरसाती में पेंटिंग करता उनके आने जाने का हिसाब रख रहा है-

वह हीर है
और फकीर भी
तख्त हज़ारा उसका मक्का है
और मनचाहा उसका दीन
वे जात की सूफी है
और मिज़ाज की फकीर
वो हीर हीर हो कर
रांझा रांझा लिखती है
और सब लिखा
हर रोज हवाओं के हवाले करके
मनचाहा हज करती है
वो हीर भी है
और फकीर भी है

जी हां दोस्ती, पिघलती शमां, खुशबूओं की पोटली सी जो जब खोली जाती है उससे अक्षर झरते हैं, नाजुक टहनी सी, शब्दों का बिछौना लगाती है, उस पर नज़्मों का सिरहना रखती है, जाने कितनी गज़लों, मीठी बातों की रजाई ओढ़ सोती है। तो ये है हमारी फकीरन ''अमृता प्रीतम'' जिसके नाम में ही अमृत और प्रीत जुड़ी हो वो मुहब्बत के सिवाये क्या लिखेंगी। यूँ तो टुकड़ों-टुकड़ों में सभी ने अमृता को पढ़ा है। मैंने कोशिश की है उनकी बेतरतीब सी ज़िंदगी को इस सीरीज में एक तरतीब दूँ और दुनिया को बताऊँ अमृता का पर्याय इश्क भी है।

''इश्क सहस्त नाम'' 2019

इश्क का हर्फ़ जुबान पर आया
तो लगा
खुदा का हर्फ़ जुबान पर आया

इसमें पंजाबी शायरी, बुल्ले शाह, सस्सी पुन्नी गुलज़ार, देवेन्द्र, राजबीबी और नामदार और भी बहुत से प्रेमियों का जमघट है

''तुम्हारे किसी खूवाब को प्यार करता रहा मैं
नहीं जागीं तुम और मेरी जगाने की हिम्मत
नहीं हो सकी
लौट आया
- गुलज़ार

2013 में ''सात सवाल'' आई जिसमें उन्होंने प्रसिद्ध लेखकों साहित्यकारों से सात सवाल पूछे। वो सात सवाल आप स्वयं पढ़े।

अभी अमृता इमरोज का आखिरी पड़ाव बाकी है। मुझे मालूम है आप सब बेचैनी से आगे के एपिसोड का इंतजार कर रहे हैं। पर निश्चिंत रहिये अंत सुखद होगा। सच्चा प्रेम मरता नहीं।

सपने का एक धान उठाया
गज कपड़ा बस फाड़ लिया
और उमर की चोली सी ली

अक्सर वे दर्द से पीड़ित रहने लगी इमरोज से प्यार से कहती, ईमा टांगे दबा दे बहुत दर्द है इमरोज खुशी खुशी उनकी टांगे दबाते उनके ख़त भी बहुतत अच्छे होते थे एक बार इमरोज बंबई बये थे अमृता ने लिखा-

जीती, तुम जितनी सब्ज़ी लेकर दे गये थे वह ख़त्म हो गई। जितने फल देकर गये थे वे भी ख़त्म हो गये। फ्रिज़ खाली पड़ा हुआ है। मेरी ज़िंदगी भी खाली होती हुई लग रही है - तुम जितनी सांस छोड़ गये थे वे ख़त्म हो रही हैं...

इक बार उमा जी ने इमरोज से पूछा था आप जानते थे कि अमृता जी साहिर से प्यार करती थी और फिर सज्जाद पर भी स्नेह रखती थी आपको कैसा लगता था। इमरोज़ जोर से हंसे और बोले, मैंने अमृता से कहा अगर तुम साहिर को पा लेती तो मैं तुम्हें साहिर के घर से निकाल लाता। जब हम किसी को प्यार करते हैं तो रास्तें की मुश्किलों को नहीं गिनते। अमृता ने तो इक बार बंबई जाते समय एक किताब साहिर को देने को थी। मुझे बखूबी मालूम था अमृता साहिर को कितना चाहती थी लेकिन मुझे ये मालूम था मैं उसे कितना चाहता हूँ विवश ज़िंदगी एक विवशता बन जाती है उन्होंने अपनी उस ज़िंदगी से नाता लिया था जिसे वे पसंद नहीं करती।

''अन्नदाता'' और इंतजार जैसी कविताओं में उनके वैवाहिक जीवन का दर्द मिलता है। अमृता का अपने पति से

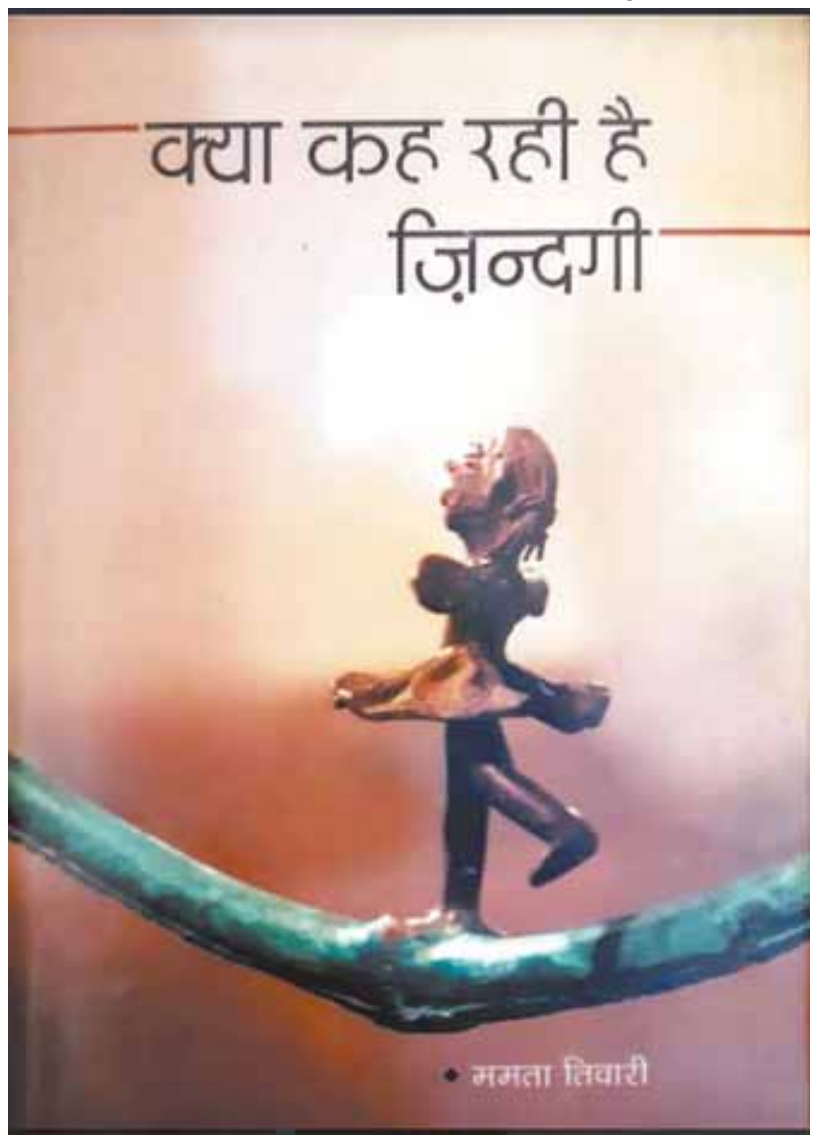

कोई मनमुटाव नहीं था वे साइकेट्रिस्ट के पास भी जाती थी वो पूछते क्यों, वो कहती बस मैं इस रिश्ते में खुद को ठीक नहीं पाती। अमृता ने दुनिया में अपने उसूल खुद तय किये तलाक आज भी स्तब्ध करता है। लिव इन लोग आज भी नहीं स्वीकार कर रहे, जबकि पति की मृत्यु के समय बेटे ने पूछा कि वो पिता को घर लाकर उनकी देखभाल कर सकता है उन्होंने केवल हाँ नहीं की बल्कि सेवा भी की उनकी मृत्यु भी उनके घर में हुई।

इमरोज सिर्फ नौ साल के साथ थे जब उनकी माँ गुज़र गई जब किसी दोस्त के टिफिन में उसकी माँ के हाथ के बने परांठे आते उन्हें उसकी खुशबू बहुत अच्छी लगती। शुरू शुरू में राज की ड्यूटी में इमरोज़ उन्हें लेने आते थे। घर में सब सो रहे थे उन्होंने नौकर से खाना लगाने को कहा सिर्फ दो रोटियाँ थी जो उन्होंने बांट ली अमृता ने चुपचाप अपने हिस्से से आधी रोटी भी उनकी थाली में डाल दी इमरोज कहते हैं-

रोटी तो आधी थी, पर चांद पूरा था

अमृता इमरोज की दास्ताँ रोककर मुझे अमृता के एक खास लेखन के बारे में बताना है। उससे पहले 2014 में लिखी पुस्तक ख़ामोशी के आंचल का जिक्र करूँ जिसमें उन्होंने सभी विदेशी लेखकों उनके ऐतिहासिक दस्तावेजों को उतारा है अद्भुत याददाश्त थी ''इश्क अल्लाह हक़ अल्लाह'' (2001) अमृता का सूफियाना इश्क था जिसमें राम, कृष्ण, कन्याकुमारी, पीरोबंदी, ईमान की सलामती उफ्फ़ कितना ज्ञान का भंडार थी वो-

पीरों बंदिए जाग लै हुण जागन वेला
इसी जन्म मिलावड़ा फिर होए ना मेला

''मन मिर्जा तन साहिबों'' (1993) ये एक संस्मरण है ओशो भी है उनके ज्योतिष, कुंडलियाँ है अक्षर सितारे भी-

जाने कितनी ख़ामोशियाँ हैं
जो हमसे आवाज मांगती है
और जाने कितने गुमनाम चेहरे हैं
जो हमसे पहचान मांगते हैं

''अनंत नाम जिज्ञासा'' (1997) इस पुस्तक में ओशो से संबंधित प्रश्न है जो पूछे भी ना गये पर जवाब मिले और संस्मरण भी

सालों पहले ''डॉ. देव'' स्कूल में पढ़ अमृता को फोन कर डाला, पूछने पर बोला, ''मैं डॉ देव''। यूँ इंदरजीत सिंह दीवाना हुआ, पागल हुआ। मैं लंबे समय तक समझ नहीं पाई कि कोई बिना चाहत के मुहब्बत कैसे कर सकता है अचानक अमृता को ज़रूरत पड़ती है बुक कवर डिजाइन करने के लिये पेंटर की और, बंबई का इंदरजीत जो ''शमा'' में काम करता था के सामने उसकी दीवानगी खड़ी थी। अब दो दोस्त ख़तों के ज़रिए किताबों फिल्मों की बातें करते। अमृता से मुलाकात के बाद इंदरजीत को दिल्ली ही रहना था।

एक बार साहिर, इमरोज़, अमृता तीनों साथ बैठे। सोचिये वो कैसी मुलाकात होगी जो व्यक्ति जिस को चाहता था दूसरा किसी और को मुहब्बत करता था। तीन व्हिस्की के गिलांस जो अमृता इमरोज के जाने के बाद साहिर के हिस्से आये उसने तीनों से एक-एक बूंद पिया।फिर एक दोस्त आती है जो गवाह बनती है एक तरफ़ा मुहब्बत और दो तरफा दोस्ती की ''उमा त्रिलोक''। जब गाड़ी और बीमे में नॉमिनी भरने की बात उठी तो रिश्ते के कॉलम में दोस्त लिखा गया। क्षमा करें अफ़सोस के साथ कहना पड़ा है। सरकारी कागज़ के आगे दोस्त जैसा बड़ा शब्द छोटा पड़ गया।

''मैंने सूरज को पहली बार एक लेखिका के रूप में देखा था एक शायरा, एक औरत, एक दोस्त, एक आर्टिस्ट के रूप में और महबूबा के रूप में'' इमरोज़ ने कहा था। दोनों अलग कमरों में रहते। अमृता क्योंकि सुबह अमृता बेला में लिखती, इमरोज़ सोये रहते इमरोज़ मतलब ''आज''।

इमरोज़ अमृता का आज थे। एक ख़त जो अंतिम था जो गलतफहमी की वजह से साहिर को बहुत बाद में मिला तब तक उनकी दूरी बढ़ गई, पर मुहब्बत तो फासलों पे भी होती है। लोग सोचते थे इमरोज़ के मन में अमृता की कमाई का लालच है। इमरोज़ अमृता से कहीं ज़्यादा कमाते थे। उनकी पेंटिंग्स मंदिर मस्ज़िद सब जगह लगी। उनकी असली दौलत अमृता थी। अमृता के सारे दुःख दर्द, बच्चे, सब इमरोज़ के थे। अमृता धीरे-धीरे बीमार रहने लगी। इमरोज़ ने पूरे घर में रंग बिखेरे थे। नीम बेहोशी में अमृता ने ''उमा'' जी से इमरोज़ के लिये एक नज़्म कही और अंग्रेजी में अनुवाद करने को कहा। उस नज़्म से पहले एक वाक्या शेअर करना चाहूँगी। रिटायर्डमेंट के बाद मेरे ससुर अक़्सर बाहर जाते पर कहाँ? इलाहबाद की गलियों में जहाँ साहित्यकार रहते थे। वहीं से उनकी शिक्षा हुई थी हमें ले जाते। दिल्ली से लौटे, बहुत कम बोलते थे पर साहित्यिक बातें मुझसे कर लेते। मुझसे बोले हौज़ ख़ास गया था। मैं उछल पड़ी ''पापा अमृता जी से मुलाकात की''। हाँ उन्होंने बताया घंटी बजाने पर इमरोज़ ने दरवाजा खोला। मैंने खास तवज्जोह ना दे उनसे कहा ''अमृता जी से मुलाकात हो सकती है'' मुस्कुरा के उन्होंने कहा '' आप बैठिये मैं उन्हें लाता हूँ'' उनकी मुसकान से मुझे ज़रा भी अंदाजा नहीं हुआ कि अमृता की ऐसी हालत है (दरअसल मुहब्बत दूसरी ही नज़र देती है) गोद में कृशकाय, नन्हीं से बच्ची की तरह, अमृता को लिये इमरोज़ ने बड़ी नफ़ासत से, रूई की तरह हल्की अमृता को सोफे पर लेटा दिया था। अमृता के लेखन में डूबकर, इमरोज़ की मुहब्बत भरी आंखे साथ ले आया। पापा की आंखे नम थी जो आसानी से नहीं होती, मेरे भी अश्रू रूक ना सके

मैं तुम्हें फिर मिलूँगी (पंजाबी में)
मैं तुझे फिर मिलूंगी
कहाँ किस तरह पता नहीं
शायद तेरी तख़ईय्ल की चिंगारी बन
तेरे कैनवास पर उतरूँगी

इमरोज़ जिये, इस ख्याल से कि अमृता को दर्द से मुक्ति मिली। फिर उन्होंने लिखा ''मनचाहा ही रिश्ता'' और भी बहुत रंगों के साथ लंबे समय तक रिश्ता रहा। लिखते रहे रंग भरत रहे। इश्क़ करते रहे...

क़लम ने आज गीतों का काफ़िला तोड़ दिया
मेरा इश्क़
यह किस कुक़ाम पे आ गया।

''अजब प्रेम की गजब कथा'' शायद इस ही कहते हैं। जहाँ विशुद्ध प्रेम था, त्याग था, समर्पण था पाने की चाह नहीं बस दूर से देख दिल भर जाये। ''ऐसी थी वो मुहब्बतें जहाँ बिना मिले सदियाँ गुज़र जायें। खुशवंत सिंह अक़्सर फोन करते तुम दोनों क्या करते रहते हो दोनों कहते ''गल्लां''। इमरोज़ के जाने के बाद दिल भर आया पर सुकून है दोनों मिलकर अब ''गल्लाँ'' करेंगे नज़्म लिखेंगे, रंग भरेंगे ... उफ़्फ़ ये मुहब्बत।

बढ़ती उम्र की सुंदर कविता जैसी...!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

'जब भी दुनिया में सबसे ज्यादा खुश लोगों की बात चलती है तो धरती के सबसे उत्तर देशों का नाम ही आता है। यहां लोग बहुत खुश हैं, परेशान नहीं हैं... ऐसे ही जुमले सामने आते हैं, जन्नत जैसे कश्मीर में नहीं, यहीं है। यह भी जानना ज़रूरी है कि बड़ी तादाद में दिमागी तनाव और बीमारियां भी यहां हैं। आत्महत्या बढ़ी हैं। कहने का मतलब है कि सिक्के का दूसरा पहलू भी है।

स्वीडन की फिल्म 'पेराडाइज इज बर्निंग' तीन बहनों की कहानी है। पहले सीन से ही समझ आ जाता है कि तीनों ही एक-दूसरे का सहारा हैं। सोलह साल की लॉरा पर दो छोटी बहनों की ज़िम्मेदारी है। तैयार नहीं है, लेकिन चारा भी नहीं है। फिल्म के बीच में महिला किरदार है हाना, जो उम्र में लॉरा से बड़ी है और उसकी मां जैसी है, लेकिन फिर शुरू होता है उनके बीच वो रिश्ता, जिसे नाम दे पाना मुमकिन नहीं है। लॉरा को अपनी जिंदगी में मां का किरदार निभाने वाले की जरूरत है, लेकिन हाना तो कुछ और ही है।

जैसे-जैसे ये लड़कियां जिंदगी के अलग अलग दौर (छोटी बहन का दांत टूटना, उसके बड़े होने की निशानी है तो मझली बहन उम्र के उस दौर में आ गई है, जहां उसे नैपकिन की जरूरत है) में आगे बढ़ती हैं, फलती-फूलती और बदलती रहती हैं। ये बदलाव असहज हैं,

लेकिन फिल्म आसानी से उस सच को दिखाती है, जो किरदारों की इस जिंदगी से निगाह हटने नहीं देती है।

बिआन्का डेलब्रावो (लॉरा) की पहली फिल्म है और अभिनय बेहतरीन है। इस होनहार युवा कलाकार के लिए कल के दरवाजे खुल गए हैं। यह जमीनी कहानी है। फिल्म में ऐसे हिस्से हैं, जो कई विषयों को छूते है। यह बड़े होने की दर्दभरी सुंदर कविता है और उन लोगों के लिए श्रद्धांजलि है, जो खुद को मजबूती के लिए मजबूर करते हैं।

फिल्म डायरेक्टर मीका गुस्ताफ्सो की यह पहली फीचर फिल्म है और पिछले साल वेनिस फिल्म फेस्टिवल में अवॉर्ड जीत चुकी है। मीका कहती है कि मैं उन किरदारों को परदे पर दिखाना चाहती थी जो आम तौर पर दिखाई नहीं देते हैं। यह लड़कियां बिना किसी नियम और बिना रोक टोक के जिंदगी को किस तरह से संभालती हैं, यह दिखाता है कि जिंदगी का सिर्फ एक ही तरीका मुमकिन नहीं है।